आज़ादी का अमृत महोत्सव

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

अंक: 33
जुलाई–दिसंबर, 2023

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड एनटीपीसी राजभाषा शील्ड से पुरस्कृत

हिंदी सलाहकार समिति की 17 अगस्त, 2023 को नई दिल्ली में आयोजित बैठक में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2021–22 के लिए एनटीपीसी राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत प्रोत्साहन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। माननीय विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, श्री आर. के.सिंह के कर–कमलों से यह शील्ड टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह ने प्राप्त की। यह शील्ड विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के उपक्रमों/विभागों में वर्ष 2021–22 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट निष्पादन हेतु प्रदान की गई। बैठक में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' के जून, 2023 अंक का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर टीएचडीसी के कारपोरेट कार्यालय की ओर से श्री आशुतोष कुमार आनंद, वरि. प्रबंधक (मा.सं.) एवं श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) भी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री आर.के. विश्नोई, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने निगम के सभी कर्मचारियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित करते हुए कहा कि निगम में राजभाषा के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। सभी कर्मचारी भविष्य में ओर भी बेहतर कार्य करने का प्रयास जारी रखें।

हिंदी दिवस के अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील

हिंदी दिवस के अवसर पर संपूर्ण टीएचडीसी परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

देश के स्वतंत्रता संग्राम में पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने में हिंदी की महति भूमिका और सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा जैसे महत्वपूर्ण कारकों पर गहनता से विचार करते हुए 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार किया। इसलिए आज का दिन प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

वैदिक कालीन संस्कृत से निकली भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक निकट संबंध हिंदी का ही है। वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो गया है कि हिंदी भाषा अपनी लिपि और उच्चारण की दृष्टि से सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हमारे देश भारतवर्ष में भिन्न–भिन्न संस्कृतियों, भाषाओं एवं बोलियों की मधुरिम ध्वनियों के प्रस्फुटन से अनेकता में एकता की भावना उत्पन्न होती है। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएं शामिल हैं। राष्ट्रीय अखंडता, सांस्कृतिक एकता तथा आपसी सद्भाव के लिये यह आवश्यक है कि हमें प्रांतीय और अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं के ज्ञान के साथ–साथ हिंदी का भी अच्छा ज्ञान हो।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग हिंदी के उत्तरोत्तर विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है तथा राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में प्रत्येक वर्ष वार्षिक कार्यक्रम तथा समय–समय पर विभिन्न दिशा–निर्देश जारी करता है। राजभाषा विभाग द्वारा इस उद्देश्य से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अनेक प्रयास किए गए हैं, जिनके परिणामस्वरूप कम्प्यूटरों पर हिंदी में कार्य करना अधिक सुविधाजनक एवं सरल हुआ है। राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाने के संवैधानिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि निगम में टिप्पण एवं पत्राचार को पर्याप्त रूप से हिंदी में किया जाए। हिंदी में कार्य करने के लिए यह सुनिश्चित करना होगा कि भाषा को सरल एवं सहज रूप में लिखा जाए।

टीएचडीसी का कार्यक्षेत्र अब ''क'' क्षेत्र के साथ–साथ ''ख'' एवं ''ग'' क्षेत्र में भी विस्तार ले रहा है। निगम के अधिकांश कर्मचारी हिंदी भाषी क्षेत्रों से हैं एवं अधिकांश कर्मचारियों की मातृभाषा हिंदी है। मुझे विश्वास है कि निगम के कर्मचारी ''ख'' एवं ''ग'' क्षेत्रों में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में अपना योगदान देंगे। हमें अब प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी के प्रचार प्रसार में अग्रणी भूमिका निभानी होगी। निगम में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 14–29 सितंबर, 2023 तक ''हिंदी पखवाड़ा'' का आयोजन धूमधाम से किया जा रहा है, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। आपसे यह अपेक्षा की जाती है कि आप सब अधिक से अधिक संख्या में इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता कर अपनी उपस्थिति दर्ज करें तथा राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी सच्ची निष्ठा दिखाएं।

आइए, हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम सभी उत्साह एवं गर्व के साथ अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करेंगे और राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम एवं वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करेंगे।

जय हिंद !

दिनांक : 14 सितंबर, 2023

(राजीव विश्नोई)

निदेशक (कार्मिक) का संदेश

साथियों,

सर्वप्रथम मैं आपको नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। मेरी ईश्वर से यही कामना है कि नया वर्ष निगम के लिए और आप सबके लिए व्यक्तिगत एवं पारिवारिक रूप से खुशियों एवं उपलब्धियों से भरा रहे।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस वर्ष के लिए हमने जिन उपलब्धियों की प्राप्ति का प्रण लिया है, वह प्रण साकार होगा और हमारे उत्साह एवं जोश में वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होगा। इससे प्रेरित और प्रोत्साहित होकर हम अपने कर्तव्य पथ पर अपने सधे हुए कदम आगे बढ़ाना जारी रखेंगे तथा निगम के नाम को और अधिक ऊंचाईयों पर ले जाने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करेंगे।

यह अंक जून, 2023 से दिसंबर, 2023 तक की अवधि का है। इस सफर के दौरान निगम में बड़ी तेजी से अनेक गतिविधियां हुई। जिनमें निगम ने अनेक तकनीकी उपलब्धियों के साथ मानव संसाधन में भी अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां दर्ज की। इन गतिविधियों में इस अवधि के दौरान निगम के राजभाषा विभाग के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं और कार्यशालाओं का आयोजन करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में महति भूमिका अदा की गई।

निगम के राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण एवं इसके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के क्रम में 17 अगस्त, 2023 को विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में माननीय केंद्रीय विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, श्री आर.के.सिंह जी के कर–कमलों से निगम को सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की श्रेणी में एनटीपीसी राजभाषा शील्ड (प्रोत्साहन) पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

निगम में 14 सितंबर से 29 सितंबर, 2023 को हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। जिसके दौरान कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रकार की उत्साहवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन कर विजेता कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। पखवाड़ा के दौरान विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य, श्री जी. के. फरलिया जी को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने निगम में ठोस राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए अपने विचार रखे, जिनको सुनने का अवसर प्राप्त हुआ।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के द्वारा 30 नवंबर, 2023 को निगम के खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय का संसदीय राजभाषा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण बैठक में माननीय समिति के सदस्यों के द्वारा टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अन्य कार्यालयों के साथ–साथ इस निरीक्षणाधीन कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा की गई।

हिंदी हमारे चिंतन, हमारे सपनों तथा हमारे संप्रेषण की भाषा होने के कारण हमारी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्वायत्तता की रक्षा की भाषा है जो हमें निरंतर अभिव्यक्ति की शक्ति प्रदान करती है। इस शक्ति में वृद्धि करने के लिए यह आवश्यक है कि हम सब मिलकर राष्ट्रवाद से ओतप्रोत इस अग्नि को लगातार प्रज्ज्वलित रखें और हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक एवं नैतिक कर्तव्यों का निर्वहन करते रहें।

इन्हीं आकांक्षाओं और अभिलाषाओं के साथ मेरी ढेर सारी शुभकामनाएं।

(शैलेन्द्र सिंह)

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक–33)

मुख्य संरक्षक
श्री राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री शैलेन्द्र सिंह
निदेशक (कार्मिक)

मार्गदर्शक
श्री वीर सिंह
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

श्री डी.पी. पात्रो
अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी)

श्रीमती हेमलता कौर
कनि. अधिकारी (हिंदी)

संपर्क सूत्र
संपादक
''पहल''
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड,
ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेलः pankajksharma@thdc.co.in

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

विषय सूची

लेख / प्रेरक प्रंसग / लघुकथा

1. जी–20 समिट 4
2. विज़न इंडिया 2047 9
3. अच्छे कर्म के 5 तरीके 14
4. समय के तीन सूत्र 15
5. सूचना प्रौद्योगिकी एवं 21वीं सदी की हिंदी 18
6. राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति 20
7. हिंदी ऐसी, माँ के माथे की बिंदी जैसी! 23
8. स्वास्थ्य परिचर्चा– गिलोय के औषधीय गुण 25
9. हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में लिए गए निर्णय 27

कविताएं / क्षणिकाएं / विचार

10. सब बढ़िया है 29
11. मेरी माँ 29
12. जिन्दगी 29
13. बहकों मतना बेटियों 30
14. जब तक सांस है, तब तक आस है 30
15. रागी 31

राजभाषा गतिविधियां

16. हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 32
17. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 37
18. 05 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 40
19. भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी विभाग सम्मानित 40

जी–20 समिट

लेख

09–10 सितंबर, 2023

मेजबान देश–भारत

थीम– ''वसुधैव कुटुंबकम'' – ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य''

भाग लेने वाले 19 देश और 1 यूरोपीय संघ

श्रीमती शैला

उप प्रबंधक, एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी

जी–20 यानी ग्रुप ऑफ ट्वेंटी – 20 देशों के बीच में होने वाला एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन जिसमें हर साल विकसित और विकासशील देश मिलकर दुनिया भर के वैश्विक आर्थिक मुद्दों के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, भ्रष्टाचार–विरोध और पर्यावरण आदि जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करते हैं। जी–20 में सभी सदस्य देश लगभग 85 प्रतिशत वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), 75 प्रतिशत से अधिक वैश्विक व्यापार और लगभग दो–तिहाई विश्व जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए यह समूह और शिखर सम्मेलन दुनिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है।

जी 20 की कब और क्यों हुई थी शुरुआत ?

1997 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद जी–20 की शुरुआत की गई थी, लेकिन साल 2007 में जब पूरी दुनिया आर्थिक मंदी की चपेट में आई तो इस समूह की अहमियत और बढ़ गई। जहां पहले इस समूह में वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नर शामिल थे, बाद में इसमें सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों को भी शामिल किया गया। सभी देशों की स्थिति को मद्देनजर रखते हुए जी 20 शिखर सम्मेलन की पहली बैठक 2008 में अमेरिका के वॉशिंगटन डीसी में हुई। सितम्बर, 2023 तक जी 20 की शिखर सम्मेलन की कुल 18 बैठकें हो चुकी हैं। जी–20 शिखर सम्मेलन की अगली बैठक 2024 में ब्राजील में होनी निश्चित हुई है।

जी–20 के सदस्य देश–

जी–20 में 19 देश (संयुक्त राष्ट्र की वीटो शक्ति प्राप्त दुनिया की पांच महाशक्तियां – अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन के अलावा वैश्विक संगठन के सदस्य देश – भारत, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, जर्मनी, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, और तुर्किये) और एक यूरोपीय संघ शामिल हैं। अध्यक्ष देश कुछ देशों और संगठनों को मेहमान के तौर पर भी आमंत्रित कर सकता है।

भारत में जी–20 का आयोजन–

16 नवंबर, 2022 (औपचारिक तौर पर 01 दिसंबर, 2022) को इंडोनेशिया के बाली शहर में हुए जी–20 शिखर सम्मेलन में आगामी जी–20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की कमान भारत को सौपी गई जो भारत के लिए गर्व की बात थी। भारत ने जी–20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन कर पूरी दुनिया का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर लिया है। आज जी–20 शिखर सम्मेलन का भारत के कूटनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में जुडने के कारण भारत वैश्विक मंच पर अपना परचम लहरा रहा है। भारत ने संयुक्त घोषणा पत्र पर दुनिया के दिग्गजों के बीच ना सिर्फ सहमति करवाई बल्कि पुराने साझेदार रूस से दोस्ती भी निभाई और यूक्रेन युद्ध में रूस के नाम का जिक्र तक नहीं होने दिया जिसे भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत माना जा रहा है। भारत ने जी–20 के बहाने पूरी दुनिया को अपनी ताकत का एहसास कराया। अगर जी–20 के सदस्यों के साथ भारत की तुलना करें तो वैश्विक जीडीपी में

हिस्सेदारी के मामले में अमेरिका और चीन के बाद तीसरा नंबर भारत का है। इसके साथ ही ग्लोबल इकॉनोमी में भारत की हिस्सेदारी 3.54 प्रतिशत है। इस बार जी–20 सम्मेलन में भारत ने दुनिया की लगभग 18.5 से 29 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व किया है।

जी–20 का लोगो किस प्रेरणा से लिया गया है?

राष्ट्रीय ध्वज के रंगों से प्रेरित जी–20 का लोगो 08 नवंबर 2022 को लॉन्च किया गया, इसमें भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल को पृथ्वी ग्रह के साथ दिखाया गया है, जो कि चुनोतियों के बीच विकास को दर्शाता है। जी–20 लोगो के बीच देवनागरी में भारत लिखा गया है। इस लोगो को मशहूर सैंड आर्टिस्ट सुदर्शन पटनायक ने बनाया है। इसके साथ ही भारत की जी–20 प्रेसीडेंसी थीम – ''वसुधैव कुटुंबकम'' – ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' का अनावरण किया गया जिसकी प्रेरणा महाउपनिषद के प्राचीन संस्कृत पाठ से ली गई है ।

जी–20 शिखर सम्मेलन 2023 में शामिल हुए देश

जी–20 शिखर सम्मेलन 2023 के अध्यक्ष के रूप में भारत की ओर से 19 सदस्य देशों और 1 यूरोपीय संघ के अलावा बांग्लादेश, ईजिप्ट, मॉरीशिस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को मेहमान देशों के तौर पर बुलाया गया। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (यूएन, आईएमएफ, डब्ल्यूबी, डब्ल्यूएचओ, डब्ल्यूटीओ, आईएलओ, एफएसबी और ओईसीडी) और क्षेत्रीय संगठनों (एयू, एयूडीए–एनईपीएडी और आसियान) की पीठों के अलावा आईएसए, सीडीआरआई और एडीबी को भी अतिथि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के रूप में आमंत्रित किया गया।

भारत ने कैसे की पूरी तैयारी?

जी–20 शिखर सम्मेलन 2023 की शुरुआत 04–07 दिसंबर, 2022 तक उदयपुर में आयोजित पहली शेरपा मीटिंग के साथ हुई। भारत ने जबसे जी–20 शिखर सम्मेलन की कमान संभाली, तबसे भारत में जी 20 देशों के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और कार्य समूहों की भारत के अलग–अलग शहरों में 60 स्थानों पर 220 से भी अधिक बैठकें की गई जिनमें दुनियाभर से जुड़े हर विषयों पर चर्चा, सुझाव और प्रस्ताव लिए गए। बिजनेस 20 (बी 20), कल्चर 20 (सी 20), एनवायरनमेंट 20 (ए20) जैसे विषयों को ध्यान में रखते हुए इन बैठकों में योग, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खास तौर पर खाने का मेन्यू शामिल रहा।

संपूर्ण देश की संस्कृति को शामिल करने के लिए कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के प्रमुख शहरों को चुना गया। जम्मू कश्मीर में श्रीनगर, हिमाचल में धर्मशाला, उत्तर प्रदेश में लखनऊ, राजस्थान में जयपुर, नई दिल्ली, हरियाणा में गुरुग्राम, मध्य प्रदेश, गोवा, उत्तराखंड में विदेशी मेहमानों की मौजूदगी में बैठकें की गईं। हर क्षेत्र से जुड़े विषयों को ध्यान में रखते हुए भारत ने टियर टू शहरों में भी बैठकें आयोजित करवाईं, जिसके कारण पूरे विश्व को भी भारत के खानपान से लेकर संस्कृति को करीब से देखने और समझने का मौका मिला।

राजधानी दिल्ली में स्वागत प्रक्रिया

- जी–20 शिखर सम्मेलन 2023 नई दिल्ली के प्रगति मैदान में ''भारत मंडपम'' में सफलतापूर्वक संपन्न किया गया जिसमें रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग को छोड़कर अन्य देशों के राष्ट्र प्रमुख जमा हुए जिनको सुरक्षित लाने और ले जाने के लिए दिल्ली शहर में सिक्योरिटी बढ़ा दी गई। राजधानी के कई इलाकों में लोगों की आवाजाही को सीमित करने के साथ–साथ ही स्कूल और कॉलेज भी बंद रखे गए।
- सम्मेलन में शामिल होने आए मेहमानों के स्वागत की जिम्मेदारी केंद्रीय राज्यमंत्रियों को दी गई। जी20 की इस बैठक के दौरान कई बड़ी–बड़ी शख्सियत मौजूद रहीं।

- सरकार ने नेताओं को लाने और ले जाने के लिए कम से कम 20 बुलेट–प्रूफ लिमोजिन (Limousines) किराए पर लिए, जिस पर लगभग 18.12 करोड़ रुपये (21.8 लाख डॉलर) खर्च किए गए। समाचार एजेंसी पीटीआई की रिपोर्ट के मुताबिक केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की वीआईपी सुरक्षा विंग के 450 ड्राइवरों को खास लेफ्ट हैंड ड्राइव और बुलेट–प्रूफ कारों को चलाने की ट्रेनिंग दी गई है.
- शहर की मुख्य सड़कों और सरकारी इमारतों पर बड़े–बड़े होर्डिंग, जिन पर लिखा है– वसुधैव कुटुम्बकम यानी दुनिया एक परिवार है, लगाए गए। राजधानी में बड़े पैमाने पर सजावट की गई । आयोजन स्थलों और सड़कों को फूलों वाले पौधों और झाड़ियों से सजाया गया। फ्लाईओवर्स पर पेंटिंग और मेहमानों के स्वागत के लिए ऊंची मूर्तियां बनवाई गई ।
- राजघाट पर महात्मा गांधी की समाधि स्थल के दर्शनार्थ हेतु लोक निर्माण विभाग द्वारा समाधि को अच्छी तरह से सजाया गया। यहाँ तक कि राजघाट के आस–पास जानवरों को भी दूर रखने अच्छा खासा इंतजाम किया गया।

भारत मंडपम पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया नेताओं का स्वागत

शिखर सम्मेलन के शुभारंभ में प्रधानमंत्री ने विश्व के शीर्ष नेताओं का स्वागत सम्मेलन स्थल भारत मंडपम पर किया। पीएम मोदी ने जिस जगह पर विश्व नेताओं का स्वागत किया, उसके ठीक पीछे 13वीं शताब्दी की प्रसिद्ध कलाकृति कोणार्क चक्र की प्रतिकृति स्थापित की गई थी। इस चक्र को समय, प्रगति और निरंतर परिवर्तन का प्रतीक माना जाता है।

जी–20 शिखर सम्मेलन के दौरान उठाए गए मुद्दे

भारत ने जी–20 में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' यानी ''सारा संसार, एक परिवार'' का संदेश दिया। भारत की अध्यक्षता में जी–20 की बैठकों में वैश्विक आर्थिक विकास, वित्तीय स्थिरता, जलवायु परिवर्तन और अन्य वैश्विक चुनौतियों पर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए।

अफ्रीकन यूनियन की एंट्री

जी–20 समिट के पहले दिन में भारत ने भारत ने 54 देशों के अफ्रीकी संघ (AU) को जी–20 में शामिल करने का प्रस्ताव रखा और सभी देशों की सहमति के साथ अपनी कूटनीतिक जीत का परिचय दिया। विशेषज्ञों की मानें तो अफ्रीका में चीन के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने में भारत का यह कदम काफी अहम साबित होगा। अफ्रीका को देखें तो सबसे तेजी से विकास करने वाले 12 देशों में से छह अफ्रीका से हैं। इंडिया मिडिल ईस्ट यूरोप कनेक्टिविटी कॉरिडोर को लॉन्च किया गया जो चीन के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है। इसमें भारत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, यूरोपीय संघ, फ्रांस, इटली, जर्मनी और अमेरिका को शामिल किया गया है। इससे सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि इन्फ्रा डील से शिपिंग समय और लागत कम होगी, जिससे व्यापार सस्ता और तेज होगा।

''ग्लोबल बायोफ्यूल्स एलायंस'' की घोषणा

समिट के पहले दिन ग्लोबल बायोफ्यूल एलायंस लॉन्च किया गया जिसमें भारत, अमेरिका और ब्राजील देश होंगे. जिसका उद्देश्य टिकाऊ बायोफ्यूल का इस्तेमाल बढ़ाना है। बायोफ्यूल पेड़–पौधों, अनाज, शैवाल, भूसी और फूड वेस्ट से बनने वाला ईंधन होता है और इसे कई तरह के बायोमास से निकाला जाता है। इसमें कार्बन की कम मात्रा होती है। अगर इसका इस्तेमाल बढ़ेगा तो दुनिया में पारंपरिक ईंधन पेट्रोल–डीजल पर निर्भरता कम होगी और पर्यावरण प्रदूषण भी कम होगा।

वन फ्यूचर अलायंस एवं जी–20 सैटेलाइट मिशन

दुनिया में तेजी से विकास करने वाले शहरों को फंड देने के लिए भारत की पहल पर बनाया गया। इसके अलावा पीएम मोदी ने ''वन अर्थ'' पर जी–20 समिट में पर्यावरण और जलवायु अवलोकन के लिए जी–20 सैटेलाइट मिशन शुरू करने के प्रस्ताव को रखते हुए नेताओं से ग्रीन क्रेडिट पहल पर काम शुरू करने का भी आग्रह किया।

6–जी टेक्नोलॉजी पर सहमति

भारत और अमेरिका के बीच 6–जी टेक्नोलॉजी विकसित करने पर सहमति बनी। इसके लिए जो अलायंस और एमओयू तैयार हुआ है, वह सिर्फ टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट करने पर ही नहीं, बल्कि उसकी सप्लाई चेन विकसित करने पर भी केंद्रित है।

राष्ट्रपति की मेजबानी में डिनर का आयोजन

शनिवार देर शाम को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की मेजबानी में डिनर का आयोजन किया गया। राष्ट्रपति मुर्मू और प्रधानमंत्री मोदी ने शिखर सम्मेलन स्थल भारत मंडपम में जी–20 नेताओं और प्रतिनिधियों के लिए आयोजित रात्रिभोज में उनका स्वागत किया। जहां मेहमानों के स्वागत किया गया वहां पृष्ठभूमि में बिहार के नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नवाशेष और भारत की अध्यक्षता में जी–20 की थीम– ''वसुधैव कुटुम्बक''– एक पृथ्वी, एक कुटुम्ब, एक भविष्य'' को दर्शाया गया। मेहमानों को स्टार्टर में पात्रम, मुख्य भोजन में वनवर्णम परोसे गए। वहीं, भारतीय रोटियों में– मुंबई पाव (कलौंजी के स्वाद वाले मुलायम बन), बाकरखानी (इलायची के स्वाद वाली मीठी रोटी), मीठे में– मधुरिमा स्वर्ण (कलश इलायची की खुशबू वाला सांवा का हलवा, अजीर–आडू मुरब्बा और अंबेमोहर राइस क्रिस्प्स), पेय पदार्थ में– कश्मीरी कहवा, फिल्टर कॉफी और दार्जीलिंग चाय परोसी गई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने यूएनएससी के विस्तार पर जोर दिया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के विस्तार और दुनिया की नई वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए सभी वैश्विक संस्थाओं में सुधारों पर नए सिरे से जोर दिया। उन्होंने कहा कि जब संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 51 सदस्यों के साथ हुई थी, तो दुनिया अलग थी और अब सदस्य देशों की संख्या लगभग 200 हो गई है। बावजूद इसके, यूएनएससी में स्थाई सदस्य आज भी उतने ही हैं। यूएनएससी के पांच स्थायी सदस्यों में अमेरिका, चीन, फ्रांस, ब्रिटेन और रूस शामिल हैं।

'नई दिल्ली लीडर्स समिट डिक्लेरेशन' (नई दिल्ली घोषणापत्र) को मंजूरी

किसी भी समिट को तब सफल माना जाता है जब उसका एक घोषणा पत्र जारी हो। जी–20 घोषणा पत्र पर आम सहमति बनाने के लिए भारतीय राजनयिकों की एक टीम को 200 घंटे से ज्यादा की लगातार बातचीत करनी पड़ी। जी–20 का सबसे जटिल हिस्सा भू–राजनीतिक पैरा (रूस–यूक्रेन) पर आम सहमति बनाना था। राजनयिकों की टीम ने 300 द्विपक्षीय बैठकें की। 200 घंटे की नॉन–स्टॉप वार्ता की। विवादास्पद यूक्रेन संघर्ष पर अपने समकक्षों के साथ 15 मसौदे वितरित किए। उसके बाद घोषणा पत्र तैयार हुआ।

10 सितंबर, 2023 को भारत ने सदस्य देशों के बीच सहमति के साथ जी–20 नई दिल्ली लीडर्स समिट डिक्लेरेशन को अपनाकर 37 पन्नों के नई दिल्ली घोषणापत्र में बताया कि हमारे पास अपनी स्थिति को बेहतर भविष्य बनाने का अच्छा अवसर है, ऐसे हालात नहीं बनने चाहिए कि किसी भी देश को गरीबी से लड़ने और ग्रह के लिए लड़ने के बीच चयन करना पड़े। डिक्लेरेशन पर सभी सदस्य देशों ने भारत की सराहना की है।

जी–20 नेताओं ने किया ये आह्वान

शिखर सम्मेलन में दुनिया के शीर्ष नेताओं ने जलवायु मोर्चे सहित विश्व के समक्ष मौजूद विभिन्न चुनौतियों से निपटने की तत्काल आवश्यकता होने का आह्वान किया। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने कहा कि जी–20 नेता वित्तीय संकट के बाद वैश्विक विकास को बहाल करने के लिए 15 साल पहले पहली बार एक साथ आए थे। हम अब अत्यधिक चुनौतियों वाले समय में मिल रहे हैं। दुनिया नेतृत्व प्रदान करने के लिए एक बार फिर जी–20 की ओर देख रही है। मेरा मानना है कि हम मिलकर इन चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा ने कहा कि उनके देश की जी–20 अध्यक्षता के दौरान जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक मुहिम के लिए एक कार्य बल बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि हम अनुकूलन, हानि और क्षति और वित्तपोषण के बीच संतुलित जलवायु एजेंडे के साथ, ग्रह की स्थिरता और लोगों की गरिमा सुनिश्चित करते हुए 2025 में सीओपी 30 तक पहुंचना चाहते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने क्या कहा?

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को जी–20 नेताओं से ''वैश्विक विश्वास की कमी'' को खत्म करने का आग्रह किया। उन्होंने 18वें जी–20 शिखर सम्मेलन के सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि ये हम सभी के लिए वैश्विक भलाई के लिए एक साथ चलने का समय है। कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के बाद दुनिया को विश्वास की कमी की एक नई चुनौती का सामना करना पड़ा और दुर्भाग्य से यूक्रेन युद्ध के कारण यह और बढ़ गई, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि अगर हम कोविड जैसी महामारी को हरा सकते हैं, तो हम इस विश्वास की कमी की चुनौती पर भी जीत हासिल कर सकते हैं।

सम्मेलन के लिए विश्व नेताओं ने की सराहना

जी–20 शिखर सम्मेलन के समापन पर वैश्विक नेताओं ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व और ग्लोबल साउथ की आवाज उठाने के लिए उनकी सराहना की। विश्व के नेताओं ने भारत के आतिथ्य की सराहना की और सफल शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता करने को लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सराहना की। वैश्विक नेताओं ने यह जिक्र किया कि देश के ''एक पृथ्वी, एक कुटुम्ब, एक भविष्य'' संदेश की गूंज सभी प्रतिनिधियों के बीच जोर से सुनी गई।

रविवार को राजघाट गए जी–20 नेता

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अगवानी में रविवार को सुबह जी–20 नेताओं ने राजघाट पहुँचकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। यहां उन्होंने जी–20 नेताओं को ''अंगवस्त्रम'' पहनाकर उनका स्वागत किया। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की प्रमुख क्रिस्टालिना जॉर्जीवा, बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सेन लूंग समेत अन्य नेता राजघाट गए।

आगामी जी–20 यानि जी–21

जी–20 की अगली बैठक 2024 में ब्राजील के शहर रियो–डी–जेनेरियो में होगी जहां, भारत के प्रस्ताव पर नई दिल्ली में अफ्रीकन यूनियन को भी इस ग्रुप में शामिल होने के कारण, इसे जी–21 का नाम दिया जाएगा। शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन प्रधानमंत्री मोदी ने ब्राजील के राष्ट्रपति लूला को जी–20 की अध्यक्षता हस्तांतरित करते हुए पारंपरिक गैवल (एक प्रकार का हथौड़ा) सौंपा।

भारत को जी 20 से क्या फायदा होगा?

भारत ने आजादी से आज तक कई उपलब्धियां हासिल करते हुए कई क्षेत्रों में टॉप–5, कई में टॉप–3 तो कुछ जगहों पर टॉप–1 पर अपनी जगह बनाई हैं जिसके फलस्वरूप आज भारत को विकासशील देशों में गिना जाता है। प्रधानमत्री श्री मोदी का भी लक्ष्य है कि जब देश आजादी के 100 साल मना रहा होगा, तब 2047 में भारत एक विकसित राष्ट्र होगा। दुनिया को बताने की जरूरत है कि भारत दुनिया का वैश्विक नेता बनने के लिए पूरी तरह तैयार है। भारत ने समय–समय पर दिखाया है कि विकसित देश उन्नत संसाधनों के बावजूद वो मुकाम हासिल नहीं कर पाते, जो भारत अपने सीमित संसाधनों के साथ कर लेता है। चाहे मंगलयान हो या कोविड जैसी महामारी में 140 करोड़ देशवासियों की रक्षा करना या फिर चंद्रयान–3 हर मामले में भारत औरों से बेहतर है। दुनिया के बाकी देश भी अगर भारत के साथ मिलकर काम करेंगे तो मानव समाज की उन्नति और पृथ्वी संरक्षण के प्रयास में तेजी लाई जा सकती है।

भारत ने अपनी पूरी ताकत के साथ दुनिया के प्रमुख 20 देशों का नेतृत्व किया जिसके कारण आज वैश्विक मंच पर भारत की शान देखते ही बनती है। हम सबको गर्व होना चाहिए कि हम भारतवासी है, हम उस देश कि संतान है जो हर हाल में आगे बढ़ने की चाह रखती ही नहीं बल्कि आगे बढ़कर भी दिखाती है, चाहे राह कितनी भी कठिन हो।

(यह लेख विभिन्न ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से एकत्रित जानकारी पर आधारित है)

विजन इंडिया 2047

श्रीमती बसु चौहान पत्नी श्री शिवराज चौहान
उप महाप्रबंधक (प्रापण), ऋषिकेश

लेख

वर्तमान में हम सभी भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने की खुशी में भारत की आजादी का "अमृत महोत्सव" मना रहे हैं। 2022 से 2047 तक की यात्रा को 'अमृत काल' कहा जा रहा है, जो मुख्यतः हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा गढ़ा गया शब्द है। अमृत काल 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्पों को प्राप्त करने की अवधि है। इसलिए, अगले 25 वर्षों की कार्य योजना पूरी तरह से 2047 में भारत के विजन पर केंद्रित होगी। वर्ष 2047, हमारे देश की स्वतंत्रता की शताब्दी होगी, अपनी स्वतंत्रता के 100वें वर्ष का जश्न हम सभी भारतवासी और अधिक हर्ष और जोश के साथ मनायेंगे।

भारत एक विकासशील देश है जो लगातार प्रगति पथ पर अग्रसर है। पिछले कई वर्षों में भारत ने कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, सैन्य बल, मजबूत अर्थव्यवस्था आदि की तरफ कई दूरगामी कदम बढ़ाए है। इसमें कोई शक नहीं कि स्वतंत्रता के समय की तुलना में भारत ने पिछले वर्षों में काफी विकास किया, लेकिन यह काफी नहीं है।

2047 में हम सभी भारत को एक विकसित देश के रूप में देखते हैं, जहां भारत एक मजबूत अर्थव्यवस्था वाला देश होगा। तकनीक के क्षेत्र में तत्परता से आगे आकर भारत रोजगार के नए रास्ते बनाएगा और बेरोजगारी जैसी गंभीर समस्या को पीछे छोड़ भविष्य में मजबूत राष्ट्र बनकर सामने आएगा।

आने वाले समय में प्रगतिशील क्षेत्रों की पहचान एवं उनको प्राथमिकता देना विकास की पहचान साबित होगी। ऊर्जा, कृषि, वाणिज्य और उद्योग, शिक्षा और रोजगार, गेमिंग, स्वास्थ्य देखभाल, बुनियादी ढांचा, संचार, रेल, शहरी परिदृश्य, सुरक्षा और रक्षा, प्रौद्योगिकी, शासन, एयरोस्पेस और ई–कॉमर्स आदि क्षेत्र हैं जिनमें विकास की अपार संभावनाएं हैं, वे निम्नवत हैं:

1. **भारतीय अर्थ व्यवस्थाः** 2047 तक 25 साल की इस अवधि में ही भारत में दुनिया की शीर्ष तीन अर्थव्यस्थाओं में शामिल हो सकता है। अभी– अभी भारत ने अर्थव्यवस्था के मानक में ग्रेट ब्रिटेन, जिसने 200 वर्षों तक हमें गुलाम बनाये रखा, को पछाड़ कर विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था बनने का गौरव प्राप्त किया है। इस अवधि में भारत एक आधुनिक, औद्योगिक राष्ट्र के रूप में विकसित होकर 'मध्यम आय वर्ग' के टैग को पार करने की ओर बढ़ रहा है। भारत 2047 तक सबसे अधिक कामकाजी उम्र की आबादी के साथ $40 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था हो सकता है।

2. **भारतीय रक्षा क्षेत्र** : यद्यपि गोला–बारूद और रक्षा उपकरणों के अधिग्रहण में आत्मनिर्भर होना एक बड़ी चुनौती होगी तथापि हमें अप्रत्याशित पड़ोसियों या प्रतिकूल वैश्विक गठबंधनों द्वारा भारत के आसपास की चुनौतियों के लिए तैयार रहने की जरूरत है। हमारी सरकारों के समेकित प्रयासों से इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता अवश्य आएगी। वर्ष 2047 तक भारत अपने अधिकांश हथियारों और गोला–बारूद का निर्माण देश में ही करेगा और विदेशी निर्भरता को समाप्त करेगा। जो न केवल देश की रक्षा जरूरतों को पूर्ण करेगा बल्कि रक्षा उपकरणों, हथियारों इत्यादि को निर्यात करने की स्थिति में भी होगा। डिफेंस एक्सीलेंस (iDEX) इनोवेशन में सैन्य सुरक्षा प्रणाली, सुरक्षित हार्डवेयर एन्क्रिप्शन डिवाइस, सतह और पानी के नीचे के मानव रहित वाहन, 4G/LTE रणनीतिक स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क, कृत्रिम बुद्धिमत्ता–आधारित छवि– विश्लेषण उपग्रह आदि जैसी प्रौद्योगिकियां शामिल हैं। भारत ने सितम्बर 2022 में मेक–इन–इंडिया अभियान के तहत स्वदेशी तकनीक से निर्मित INS विक्रांत विमानवाहक युद्धपोत को नौसेना में शामिल कर रक्षा क्षेत्र में एक नए अध्याय को जोड़ा है वर्ष 2047 तक देश इस दिशा में आगे बढ़ते हुए न केवल देश ने रक्षा क्षेत्र में एक नए अध्याय को जोड़ा है। वर्ष 2047 तक देश इस दिशा में आगे बढ़ते हुए न केवल देश की रक्षा जरूरतों के लिए युद्धपोत, पनडुब्बी, लड़ाकू जेट, हथियार, गोला–बारूद विकसित करा रहा होगा बल्कि इनका निर्यात भी कर रहा होगा।

3. **भारत का कृषि क्षेत्र** : भारतीय वृद्धिगत जनसंख्या की आवश्यकताओं हेतु 'नए युग की कृषि' परियोजना भारतीय किसानों को उच्च कृषि उत्पादन में मदद करेगी। इस परियोजना में सूक्ष्म सिंचाई और जैविक खेती मुख्यतः प्रस्तावित हैं। 2047 तक ड्रोन आधारित मौसम की भविष्यवाणी और स्वचालित कृषि मशीनरी आधुनिक खेती का भविष्य होगी। आर्टिफीसियल इन्टेलेजेंस (एआई)– संचालित रोपण, निराई और स्वचालित सिंचाई और कटाई कृषि प्रौद्योगिकी के कुछ नवीनतम उदाहरण हैं। एआई का उपयोग मिट्टी का सर्वेक्षण और विश्लेषण करने, फसल के लिए सबसे उपयुक्त वातावरण की भविष्यवाणी करने और किसानों को डिजिटल कृषि में शामिल होने के लिए एक सामाजिक मंच बनाने के लिए भी किया जायेगा।

4. **भारतीय ढांचागत विकास** : देश के ढांचागत विकास में नई सड़कों, पुलों, रेलमार्गों, शहरी बुनियादी ढांचे और सुविधाजनक शहरों का विकास महत्वपूर्ण है। उत्तम संपर्क मार्ग न केवल शहरों को आपस में जोड़ते हैं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वोत्तम सुविधाओं तक पहुंच सुनिश्चित करने में भी मदद करते हैं। "भविष्य के लिये तैयार शहरों" (future ready cities) के निर्माण से अगले 25 वर्षों में शहरों को और अधिक नवोन्मेषी और पर्यावरण के अनुकूल बनाने में मदद मिलेगी। वर्ष 2047 तक भविष्य के लिये तैयार शहरों के विकास के लिये बड़ी कार्य योजना महत्वपूर्ण होगी। इस कार्य योजना के तहत वर्तमान में ही देश भर में चौड़ी–चौड़ी सड़कों, बड़े–बड़े पुलों, स्मार्ट सिटीज, नए रेलमार्गों के विकास और पुराने रेलमार्गों का विद्युतीकरण आदि का कार्यान्वयन मूर्त रूप में देखा जा सकता है। 2047 तक देश के कई शहर बुलेट ट्रेन से जुड़ चुके होंगे। जिससे शहरों के बीच आवागमन सुगम और अधिक सुविधाजनक हो जायेगा, साथ ही इससे एयरलाइनों पर यात्री भार कम होगा। देश के अधिकांश बड़े शहरों में मेट्रो रेल का निर्माण हो चुका होगा। अधिक भीड़–भाड़ वाले शहरों में कई स्तरीय सड़कों (ग्रेड सेपेरेटर्स) का निर्माण हो चुका होगा, जो परिवहन को निर्बाध चलने में सहायक होंगे, साथ ही भीड़–भाड़ की समस्या से बचने के लिए स्काई बस, मोनो रेल आदि परिवहन सुविधाएं कई शहरों में विकसित हो चुकी होंगी।

तटीय उपनगरों और द्वीपों के बीच में लोगों को जल संपर्क प्रदान के लिए 'वाटर मेट्रो' का निर्माण हो चुका होगा। मेट्रो नेटवर्क के निर्माण के अतिरिक्त देश में कम लागत वाले मोबिलिटी समाधान मेट्रो– नियो (ओवरहेड इलेक्ट्रिक ट्रॉली बस प्रणाली), मेट्रोलाइट परियोजना, लाइट अर्बन रेल ट्रांजिट सिस्टम सामूहिक और सुविधाजनक यात्रा के साधन विकसित हो चुके होंगे।

5. **भारतीय शिक्षा प्रणाली** : भविष्य की शिक्षा प्रणाली समृद्वि की ऊंचाइयों को प्राप्त करेगी और गांवो में भी शिक्षा व्यवस्था को सुधारेगी। देश में गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने के लिए कई और नए एम्स, आई.आई.टी., आई. आई.एम. खुल चुके होंगे। भारत सरकार के सार्थक प्रयासों से स्कूली शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा को प्राप्त करना आसान होगा। जिससे न केवल स्वरोजगाार की संभावनाएं विकसित होंगी बल्कि अनुसंधानों और शोधों की ओर अग्रसर होने वाले छात्रों को बेहतर अवसर प्राप्त हो सकेंगे। ई–लर्निंग और एम–लर्निंग तकनीक से छात्रों को दुनिया में कहीं से भी समृद्व शैक्षिक अनुभव प्राप्त करने में मदद करेगी। वर्तमान में ही भारत अमेरिका के बाद ई–लर्निंग के मामले में दूसरे स्थान पर है। 2047 तक विदेशों से हजारों छात्र व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत का रूख कर रहे होंगें।

6. **भारतीय गेंमिग उद्योग** : बहुत तेजी से प्रगतिशील भारतीय गेंमिग उद्योग और इसका इकोसिस्टम दुनिया के अग्रणी बाजारों में से एक बन जाएगा। दिलचस्प शैलियों के साथ नित नए–नए खेल विकसित हो रहे हैं, जो विश्वभर में भारत के लिए नयी सम्भावनायें प्रदान करेंगी। विशाल इंटरनेट सेवाओं, बढ़ती युवा आबादी और मोबाइल फोन की बढ़ती संख्या के साथ, गेंमिग उद्योग के सुर्खियों में बने रहने और विकास की प्रबल संभावनाएं है।

7. **भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र** : भारत जो विश्वभर में जेनेरिक औषधि का सबसे बड़ा उत्पाद है और क्योंकि विश्वभर की 50% से अधिक वैक्सीन की मांग की आपूर्ति करता है। इसलिए इसे विश्व की फार्मेसी कहा जाता है। कोविड–19 के बाद भारत एक भिन्न स्वरूप में उभरा है। इस वैश्विक महामारी के काल में भारत ने न केवल अल्प समय में वैक्सीन विकसित की, बल्कि देश की विशाल जनसंख्या को सीमित अवधि में टीकाकरण करने में सफलता प्राप्त की, जो विकसित देश भी नहीं कर पाए थे। इसके अतिरिक्त भारत ने विश्वभर के कई देशों को इस वैक्सीन का निर्यात भी किया। भारत ने अपने राज्यों/केंन्द्र शासित प्रदेशों को 220 करोड़ (अप्रैल 2022) वैक्सीन खुराक की आपूर्ति की और देश की अधिकांश जनसंख्या का टीकाकरण किया तबसे हेल्थकेयर और ड्रग इनोवेशन सुर्खियों में आ गया है। इतने कम समय में विशाल जनसंख्या का टीकाकरण करना अपने आप में आश्चर्य से कम नहीं है। भारत में विश्वस्तरीय चिकित्सालयों का निर्माण होने से न केवल देशवसियों को बेहतर उपचार की सुविधा मिल पा रही है बल्कि कई अन्य देशों से भी लोग सस्ते उपचार हेतु देश की ओर रूख कर रहें हैं, जिससे देश को मेडिकल टूरिज्म से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति हो रही है। इस क्षेत्र में आगामी वर्षों में और अधिक वृद्धि की संभावना है। नियम–आधारित कार्यों और संज्ञानात्मक–आधारित क्षमताओं को स्वचालित करके रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन (RPA) में तेजी आएगी। भारत में 2047 तक हेल्थकेयर दिग्गज बनने की क्षमता है और जिस गति से इस क्षेत्र में विकास हो रहा है, तब तक भारत हेल्थकेयर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर चुका होगा।

8. **भारत का परिदृश्य**: सीआईआई की रिपार्ट के मुताबिक, भारत में सबसे ज्यादा कामकाजी उम्र की आबादी मौजूद है। फलते–फूलते भारतीय स्टार्टअप, यूनिकॉर्न, आक्रामक शहरीकरण, ढ़ांचागत विकास, समेकित विकास योजनाओं और 'मेक इन इंडिया' की अवधारणा ने भारतीयों के लिए रोजगार के कई अवसर पैदा किए हैं। मेक–इन–इंडिया अभियान के तहत भारतीय खिलौनों के क्षेत्र पर एक अनुकरणीय प्रभाव देखा गया है, जहां खिलौनों का आयात 70% तक गिर गया, जबकि निर्यात बढ़कर 61% हो गया। इन सभी विकासोन्मुख कार्य याजनाओं से न केवल रोजगार के अवसर पैदा होंगे, बल्कि स्वरोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होगी, जो अन्य रोजगार के अवसर पैदा

करेंगे। 2047 तक विश्व की अधिकतम जनसंख्या वाला देश भारत विश्वभर के लिए कामकाजी मानव संसाधन उपलब्ध करा रहा होगा, इस प्रकार अधिकतम जनसंख्या के कारण अधिकतम काम करने वाले हाथों के रूप में विश्व के सामने होंगे।

9. **भारतीय रक्षा और एयरोस्पेस क्षेत्र** : भारतीय रक्षा और एयरोस्पेस क्षेत्र वर्ष 2047 तक 85,000 करोड़ के मौजूदा आकार से 5 लाख करोड़ रूपये होने की संभावना है। देश के अनेकों शहरों में हवाई अड्डों का निर्माण होगा और देश के अधिकांश शहर हवाई सेवा से जुड़ चुके होंगे। "मेक –इन–इंडिया" अभियान के तहत स्वदेशी तकनीक तथा विदेशी तकनीकी से देश में निर्मित रक्षा उपकरण, युद्धक टैंक, तोपे, हेलीकाप्टर आदि विदेशों को निर्यात हो रहे होंगे और संभवत हवाई जहाजों का भी देश में निर्माण संभव हो जाय। भारत अभी तक अधिकांश रक्षा उपकरणों का आयात ही करता आया है, किंतु सरकार के ''आत्मनिर्भर भारत'' अभियान के अंतर्गत रक्षा उपकरणों, अति शीत मौसम वस्त्र प्रणाली (ईसीडब्ल्यूसीएस) तथा भारतीय सेनाओं की जरूरतों के लिए आवश्यक सामग्री, हथियार, उन्नत तकनीकी उपकरण आदि का निर्माण में न केवल देश में ही हो रहा होगा बल्कि भारत इन उपकरणों को कई अन्य देशों को निर्यात कर देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा होगा।

10. **इलेक्ट्रिक वाहन** : पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों के कारण लोग इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर रूख कर रहे हैं। 'शून्य–उत्सर्जन' 2070 के सपने के लिए राष्ट्र ने अपने संसाधनों को विद्युत गतिशीलता पर केंद्रित किया है। हालाँकि, भारत में एक पूर्ण– विद्युत पारिस्थितिकी तंत्र में कुछ बाधाएँ हैं: उच्च लागत, अपर्याप्त बुनियादी ढ़ाँचा, आदि। किन्तु बीतते समय के साथ इन बाधाओं को काफी हद तक दूर कर लिया जायेगा और भारत सरकार की प्रोत्साहन योजनाओं की सहायता से इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग में निरंतर वृद्धि होगी ही। वैसे भी भारत सरकार द्वारा वर्ष 2030 के पश्चात जीवाश्म ईधन आधारित वाहनों का उत्पादन बंद करने के कारण इन वाहनों का प्रयोग अवश्य बढ़ेगा। वह दिन दूर नहीं जब जीवाश्म ईंधन आधारित वाहन सड़कों से पूर्णतः गायब ही हो जायेंगे। इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रचलन बढ़ने से वर्तमान में सर्वविद्यमान पेट्रोल पंप गुजरे जमाने की बात बन चुके होंगे और उनके स्थान पर ग्राहकों के लिए सुविधाजनक फास्ट चार्जिंग इलेक्ट्रिक स्टेशनों का निर्माण हो चुका होगा। हमारे देश के विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग कच्चे तेल की खरीद के बजाय अन्य जरूरतों को पूर्ण करने में होगा।

11. **भारतीय ई–कॉमर्स उद्योग** : भारत 2034 तक दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ई–कॉमर्स बाजार बनने वाला है। राष्ट्र अंततः अमेरिका को भी पीछे छोड़ देगा। डिजिटल भुगतान, हाइपर–लॉजिस्टिक्स (लोकेशन–बेस्ड लॉजिस्टिक्स), एनालिटिक्स–संचालित ग्राहक जुड़ाव और डिजिटल विज्ञापन जैसे नवाचारों से इस क्षेत्र में वृद्वि का समर्थन करने की संभावना है। अति अल्प समय में आर्डर की डिलीवरी संभव होगी। मोबाइल फोन के उपयोग और इंटरनेट की उपलब्धता ने ई–कॉमर्स को अधिकांश भारतीय कंपनियों और उपभोक्ताओं के लिए पसंदीदा विकल्प बना दिया है। भारतीय ई–कॉमर्स उद्योग 2047 तक 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर की बड़ी छंलाग लगा सकता है।

12. **भारतीय मेट्रो परियोजनाएं**: देश में कई मेट्रो परियोजनाओं को सफलतापूर्वक विकसित किया गया है और कई अन्य प्रस्तावित हैं। भारत में मेट्रो नेटवर्क की वर्तमान लंबाई 500 किमी. से अधिक है, और स्वतंत्रता के 100 वें वर्ष तक लगभग 5000 किमी लंबी होने की उम्मीद है। भारत का मेट्रो नेटवर्क विश्व स्तर पर पांचवा सबसे बड़ा है, जो दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पुणे, चेन्नई, हैदराबाद, कोच्चि, जयपुर, गुरूग्राम, नोएडा, लखनऊ आदि शहरों में काम कर रहा है। वर्ष 2047 तक देश के अधिकांश शहरों में न केवल मेट्रो नेटवर्क का निर्माण हो चुका होगा, बल्कि आस–पास के शहर इंटर सिटी मेट्रो नेटवर्क से जुड़ चुके होंगे। 2047 तक 100 प्रमुख भारतीय शहरों का मेट्रो नेटवर्क हो जाएगा।

13. **भारतीय खेल उद्योग** : भारत 2047 तक खेलों के मामले में शीर्ष पांच देशों में शामिल हो जाएगा। भारत तेजी से खेल के बुनियादी ढ़ांचे, खेल विज्ञान केंद्रों, सामुदायिक कोचिंग सुविधाओं आदि का निर्माण कर रहा है। साथ ही, देश अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षकों की व्यवस्था कर वार्षिक खेल आयोजनों का आयोजन कर रहा है। खिलाडियों के लिए प्रोत्साहन योजनाओं के साथ–साथ विश्वस्तरीय सुविधाओं की उपलब्धता की निरंतरता सुनिश्चित की जा रही है। जिसके बेहतर परिणाम अवश्य ही प्राप्त होंगे। क्रिकेट के अलावा अन्य खेलों में भी भारत आगे बढ़ेगा और सफलता प्राप्त करेगा। देश निरंतर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने प्रदर्शन को बेहतर कर रहा है। मुक्केबाजी, भारोत्तोलन, भालाफेंक, एथेलेटिक्स इत्यादि में देश को सर्वोत्तम प्रदर्शन की उम्मीद है।

14. **भारतीय ऊर्जा क्षेत्र 2047 तक फलेगा–फूलेगा** : 2047 तक भारत को एक ऊर्जा–स्वतंत्र राष्ट्र में बदलने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का स्पष्ट लक्ष्य है। ऊर्जा आयात प्रति वर्ष 12,000 करोड़ रूपये तक है, जो देश की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। भारत का लक्ष्य 2030 तक कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के आयात में कटौती करना है। भारत में वर्ष 2047 तक दुनिया के सबसे बडे सौर और पवन पार्क विकसित हो चुके होंगे। इस दिशा में पहले ही भारत काफी क्षमता विकसित कर चुकी है। 'हरा–हाइड्रोजन" जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक वैकल्पिक ईंधन होगा। हाइड्रोजन स्टोरेज और पम्ड स्टारेज परियोजनाओं के द्वारा ऊर्जा संचय संभव हो पाएगा, जो अनिश्चित और अविश्वसनीय वैकल्पिक (पवन और सौर) के अतिरिक्त उत्पादन को संचय कर पायेंगे। साथ ही ग्रिड स्थिरता के लिए हाइड्रो परियोजनाओं में नई पम्प स्टोरेज परियोजनाओं का निर्माण होगा, जो अनिश्चित वैकल्पिक (पवन और सौर ऊर्जा) के कारण कम आवृति के समय पर विश्वसनीय जल विद्युत शक्ति उत्पन्न कर राष्ट्रीय ग्रिड को स्थिरता प्रदान करेगी। विश्व भर में ऊर्जा क्षेत्र में अगले कुछ वर्षों में कई नवोन्वेषी पहलों का कार्यन्वयन होने की संभावना है। वर्ष 2047 तक संभवतः हमारे घरों, खेत–खलिहानों, मैदानों और वनों के ऊपर से गुजरती हाई टेंशन पारेषण लाइनें गायब ही हो जायेंगी, क्योंकि तब तक हाई टेंशन पारेषण (ट्रांसमिशन) लाइनों के स्थान पर बिना तार के विद्युत पारेषण संभव हो पायेगा । विश्व के कुछ देश इस दिशा में आगे बढ़ चुके हैं, जिनमें पारेषण हेतु माइक्रो वेव तकनीकी पर आधारित रेक्टेना उपयोग किया जायेगा। वर्ष 2047 तक कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के आयात मै काफी कटौती हो जायेगी क्योंकि इन जरूरतों को इलेक्ट्रिक वाहन एवं वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों के द्वारा पूर्ण कर लिया जायेगा।

15. **भारत के लिए भविष्य की प्रौद्योगिकी की आवश्यकता** : आने वाले 25 सालों में भारत नंबर 1 टेक–सेवी देश बन सकता है। प्रौद्योगिकी सभी प्रकार की प्रगति को बढ़ावा देने के लिए नई उत्प्रेरक बन गई है। ब्लॉकचेन, साइबर सिक्योरिटी, बिहेवियरल एनालिटिक्स, एआई, वीआर, एआर और एनएफटी (अपूरणीय टोकन) जैसी उभरती प्रौद्योगिकियां भारत में विकसित हो रही हैं। 50% से अधिक प्रक्रिया को रोबोट द्वारा स्वचालित और नियंत्रित किया जा सकेगा, जिससे सटीक मौसम की भविष्यवाणी, नए जमाने की कृषि, जोखिम शमन, और बहुत कुछ संभव हो सकता है। भारत विश्व भर को उच्च गुणवत्तापरक मानव जन शक्ति उपलब्ध करवाता रहा है, किन्तु 2047 तक देश में प्रौद्योगिकी के विकास के साथ विदेशों से भारतीय वापस अपने देश की ओर रूख करने लगेंगें।

भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था लगातार प्रगति की ओर अग्रसर है, आजादी के बाद हम सभी दासता की दीवार तोड़कर पिछले 75 सालों में यहां तक आ पहुंचे है, जहां दुनिया भारत को प्रगतिशील विकासशील देश की तरह देख रही है। सन् 2047 के विजन के तौर पर हम सभी भारत के लोगों का यही दृष्टिकोण होना चाहिए कि हम अपने–अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण मनोयोग, मेहनत और लगन, समर्पित और निष्ठावान भाव से उत्साहपूर्वक कार्य करें।

अच्छे कर्म के 5 तरीके

लेख

सुश्री भावना रावत, प्रबंधक
पीएसपी, टिहरी

(टीम एस्ट्रोयोगी के लेख "Five Ways to Create Good Karma"- का हिंदी अनुवाद)

कर्म, आम आदमी के शब्दों में, किसी व्यक्ति का कार्य, प्रयोजन या कृत्य है। सरल शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि आपके कार्य आपके भविष्य को परिभाषित करते हैं क्योंकि आप जो बोएंगे वही काटेंगे। सुखी और शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपने अच्छे कर्म करें। दूसरों के प्रति हमारी अच्छाई, प्यार, देखभाल और मदद ही हमें शांत और खुशहाल जीवन की ओर ले जाएगी। किसी के साथ गलत मत करो, भले ही आपको लगे कि उसने आपके साथ गलत किया है। बदला कभी भी सही प्रत्युत्तर नहीं है, क्योंकि यह उसके बुरे कर्मों को कम करता है और आपके बुरे कर्मों को बढ़ाता है। हमेशा याद रखें कि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे को हानि पहुंचाकर बच नहीं सकता, देर–सबेर उसे अपने कर्मों का फल भुगताना ही पड़ता है।

इस बात पर हमेशा विचार होता आया है कि क्या कर्म पूर्व जन्म के कर्मों से संबंधित हैं, या वर्तमान के कर्म ही भविष्य को प्रभावित करते हैं। चक्र दोनों तरीकों से चलता है। ऐसा देखा गया है कि किसी न किसी समय व्यक्ति को अकारण ही कष्ट और पीड़ा का अनुभव होता है। इसका संबंध किसी के पूर्व के बुरे कर्मों से हो सकता है। इससे छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका सकारात्मक रहना है और अपने चारों ओर अच्छे कर्म करना है, इस हद तक कि यह आपके अतीत के गलत कार्यों पर हावी हो जाए।

यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे आपको अपने आसपास अच्छे कर्म करने में मदद मिलेगी:

सकारात्मक सोचें :– आपके विचार आपके व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं, और जीवन में लोगों और कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ, आप स्वचालित रूप से अपने लिए एक सकारात्मक परिवेश बना लेंगे। एक सकारात्मक मन केवल सुधार के बारे में सोचता है और जो सभी की बेहतरी के बारे में सोचता है, वह केवल अपने अच्छे कर्मों में योगदान कर रहे हैं।

प्यार फैलाएं:– अधिक प्यार करें, नफरत कम। हालांकि, यह कोई नई विचारधारा नहीं है, किन्तु यह महत्वपूर्ण है और उल्लेखनीय है। आप प्रेम के सरल कार्य से ही बुराई पर विजय पा सकते हैं। उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना आसान नहीं है जो आपके साथ उचित व्यवहार नहीं कर रहे हों, लेकिन याद रखें, उससे पार पाने के लिए कभी भी उस व्यक्ति के स्तर तक न गिरें। यह आपके दिल और दिमाग को नकारात्मकता से भर देगा। हमेशा अच्छा बनने का प्रयास करें, किसी को ठेस न पहुंचाएं, खुश रहें और खुशियां फैलाएं। नकारात्मक लोगों को नजरअंदाज करें।

दर्द को समझें:– कार्य करने से पहले हमेशा सोचें। कभी भी अपने कार्यों को किसी व्यक्ति के दुःख का कारण न बनने दें। हमें यह समझना चाहिए कि यदि हमारे कार्य किसी दूसरे को चोट पहुंचाते हैं, या पीड़ा पहुंचाते हैं, तो यह केवल हमारे बुरे कर्मों को बढ़ाता है जो देर–सबेर हमारे पास वापस आ जाते हैं।

स्पष्ट इरादे और विचार:– बुरा कार्य बुरे कर्म को जन्म देता है और बुरे इरादे को भी। हम महसूस कर सकते हैं कि हम जो सोचते हैं या महसूस करते हैं वह हमारे साथ रहता है, लेकिन ऐसा कभी नहीं होता है। हर विचार के जवाबदेह होते हैं। आपको हमेशा सावधान रहना चाहिए कि आप क्या सोचते हैं, क्योंकि यह जल्द ही क्रियाओं में बदल जाता है और हर क्रिया की समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है।

अपने मित्रों का चयन बुद्धिमानी से करें:– हम आम तौर पर उन लोगों से जाने जाते हैं जिनके साथ हम ज्यादा समय बिताते हैं। यह एक आम धारणा है और काफी हद तक तथ्यात्मक भी है कि जिन लोगों के साथ हम अपना अधिकतर समय बिताते हैं, उनका हमारे व्यवहार और सोच पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए सकारात्मक, खुश और दयालु लोगों के साथ रहना बहुत महत्वपूर्ण है। नकारात्मक और बुरी आत्माओं के साथ समय बिताने से, देर–सबेर आपके अंदर भी वही भावनाएं शामिल हो जाएंगी।

समय के तीन सूत्र

लेख

शीला देवी
कनिष्ठ अधिकारी (वाणिज्यिक), ऋषिकेश

हमें सबसे अधिक काम वर्तमान को लेकर करना चाहिए, सबसे ज्यादा सावधानी वर्तमान के प्रति रखनी चाहिए। इसी अवस्था में जीवन जीवंत है। भूतकाल में जीवन के साथ यादें हैं, भविष्य में जीवन एक कल्पना है, लेकिन वर्तमान में जीवन भी जिंदा है। जिंदगी को जिंदा देखना हो तो वर्तमान को ठीक से जीना सीखना होगा। वैसे तो मुर्दे के पास भी एक जिंदगी होती है। आखिरी सांस लेने के बाद जलाए या दफनाए जाने तक जो समय होता है, वह मुर्दे की जिंदगी है। हमने यदि वर्तमान को नहीं समझा, तो हमारी जिंदगी भी मुर्दे की तरह है। वर्तमान कितना बारीक है, थोड़ा इसे भी समझना पड़ेगा, क्योंकि वर्तमान तुरंत अतीत में बदल जाता है और भविष्य शीघ्र वर्तमान में उतर आता है।

वर्तमान से हासिल क्या होता है, थोड़ा यूं समझते हैं। अतीत की पूंजी है यादें, स्मृतियां जो अधिकांश मौकों पर अशांत करती हैं। यादें भ्रम और भय पैदा करती हैं। भविष्य की पूंजी है कल्पनाएं, जिससे बेचैनी उतरती है। अब आते हैं वर्तमान पर। इसके दो भाग कर लीजिए। यदि वर्तमान में जीना चाहें तो यह मालूम होना चाहिए कि हम तीन चीजों से बने हैं– शरीर, मन और आत्मा। वर्तमान यदि शरीर पर केंद्रित है तो भोग और विलास के सिवाय कुछ हासिल नहीं होगा। यदि मन केंद्रित है, तो मन का तो स्वभाव ही है, वर्तमान पर कभी नहीं टिकना। वह या तो अतीत में खो जाता है या भविष्य में छलांग लगाने लगता है। अब बात आती है आत्मा की। यदि अपने वर्तमान में आत्मा के साथ जीएंगे तो दुनिया में हमसे बड़ा शांत, सौम्य, विनम्र और जीवन के हर पल का आनंद उठाने वाला कोई दूसरा नहीं होगा। तो दो रास्ते हैं वर्तमान के। एक शरीर का, दूसरा आत्मा का। अब किसका चयन करना है, यह हम पर निर्भर है।

1. **वर्तमान**– सबसे पहले तो यह समझ लें कि मन को रोके बिना वर्तमान पर नहीं पहुंचा जा सकता। यदि मन सक्रिय है, तो या तो हम अतीत में पड़े हैं, या भविष्य में घिरे हुए हैं। यहां वर्तमान से हमारा कोई लेना–देना नहीं होगा। सिर्फ इस भ्रम में होंगे कि हम वर्तमान में हैं, लेकिन सच यह है कि मन के सक्रिय होते कोई वर्तमान में हो ही नहीं सकता। वर्तमान में देह तो सक्रिय होगी, लेकिन इससे काम नहीं चलेगा। चेतना जाग्रत होनी चाहिए। यदि चेतना जाग्रत नहीं है तो देह वर्तमान में केवल भोग–विलास ही कर पाएगी। चेतना जाग्रत कैसे होगी? इसके लिए मन पर काम करना पड़ेगा। चेतना यानी हमारी कॉन्शियसनेस। चेतना सबसे बड़ा काम यह करती है कि जैसे ही अतीत की कोई बात याद आती है, वह समझाती है कि जरूरी हो और कोई अनुभव लेना हो, तो ही भूतकाल की घटना को याद करो और तुरंत विदा भी कर दो। ऐसे ही चेतना समझाती है कि भविष्य की योजनाएं बनाओ, आने वाले समय को लेकर होमवर्क भी कर लो, लेकिन बेचैनी शुरू होते ही तुरंत विदा करो। तब हम इस शरीर से वर्तमान को जी सकेंगे। यदि वर्तमान पर नहीं टिकते हैं तो हमारे जीवन में जो भी घटना आएगी, चिंता लेकर आएगी।

   चिंता अधिक समय टिक जाए, तो बीमारी बन जाती है। कई लोगों का तो स्वभाव ही हो जाता है छोटी–छोटी बातों पर चिंता पालना, बेचैन रहना। जीवन में यदि चिंता का कोई मामला आए तो या तो हम किसी पर थोप देते हैं या किसी की मदद लेते हैं, या उसे किसी से बांट लेते हैं। यदि ये तीन काम नहीं किए, तो चिंता बढ़ेगी ही। भूत व भविष्य पर टिकने का कारण ही चिंता और बेचैनी है। फिर उसका अगला कदम कुंठा है। तो चिंता को निपटाने के दो तरीके हैं– एक बुद्धि से, दूसरा मन से। बुद्धि हमको वर्तमान पर टिकाएगी और कहेगी रुको, कोई निदान निकालते हैं। मन कहेगा चलो, कुछ पिछला सोचते हैं, कुछ आगे चलते हैं और हम परेशान हो जाएंगे। इसलिए वर्तमान के तीन सूत्र पकड़कर चलिए। पहला–करो, दूसरा–सीखो और तीसरा–भोगो।

क) करो– वर्तमान का यदि सामान्य रूप देखना हो तो एक शब्द प्रयोग कीजिए– आज। यह वर्तमान का सबसे बड़ा रूप है। यूं तो वर्तमान बहुत बारीक है। पकड़ में नहीं आएगा, क्योंकि जब तक उसे समझ पाएं, वह भूत हो जाता है और जब तक उस पर कुछ कर पाएं, भविष्य तो वर्तमान बन जाता है। इसलिए थोड़ा आज को समझें। आज–

जिसे अंग्रेजी में टुडे कहते हैं, वर्तमान का फैला हुआ आसान रूप है। हम साधारण मनुष्यों के लिए वर्तमान का सही स्वरूप आज है। इस आज में हमारे पास 24 घंटे भी हो सकते हैं और 12 भी। अपनी–अपनी सुविधानुसार तय कर लें और उन्हें अपना वर्तमान मान लें। जिंदगी थोड़ी आसान हो जाएगी। आज को और अच्छे तरीके से समझना हो तो श्रीराम के वनवास में चलना होगा। मान लो हमारे पास आज में 24 घंटे हैं तो रामजी के पास 14 वर्ष थे। पूरे 14 बरस की अवधि को उन्होंने आज जैसा माना था और उस आज को इतने अच्छे से जिया कि फिर राजा बने, रामराज्य स्थापित हो गया। तो करो का अर्थ यह हुआ कि जो भी करना हो, आज को समझकर आज में ही कर लो। अपने टुडे को बहुत परफेक्ट रखो। इसे सीधे–सीधे यूं कहें कि जो भी करना है, आज कर डालो। बस, यहां दो बातें याद रखिएगा– वह करने लायक हो और फलदायक हो।

ख) **सीखो**– वर्तमान में जैसे करो का महत्व है, वैसे ही सीखो भी महत्वपूर्ण है। हर घड़ी, हर कदम पर, हर काम में कुछ न कुछ सीखना मिल रहा होता है। हमें इतना जाग्रत रहना चाहिए कि सीखने की प्रवृत्ति ऐसी हो कि हर बात से कुछ सीख लेंगे। सीखयुक्त जीवन भयमुक्त होता है। चूंकि भविष्य मनुष्य को डराता है, तो भयमुक्त होने की तैयारी वर्तमान में ही करनी पड़ेगी। इसलिए सीखो कि भयमुक्त कैसे रहा जाए। वर्तमान की सबसे बड़ी सीख होनी चाहिए कि डरेंगे कभी नहीं। जो होगा, निपट लेंगे।

ग) **भोगो**– वर्तमान में देह बिना भोगे रहेगी नहीं। कुछ न कुछ भोगना ही है उसे। दुनिया में भोगने के लिए एक सबसे बड़ा, प्यारा तत्व है प्रकृति से मिला रस। इसे पंचरस भी कहा जा सकता है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश–ये जो पंचतत्व हैं, इनके रस को वर्तमान में भोगना है और शरीर को इनसे जोड़ना है। इसका एक नाम या रूप स्वास्थ्य भी है। जो स्वस्थ है, समझकर चलिए उसने वर्तमान को अच्छे से जिया। बीमारी का संबंध न तो हमारे अतीत से है, न ही भविष्य से। यह सबसे अधिक प्रभाव हमारे वर्तमान पर डालती है। इसलिए प्रकृति के पंचरस का पान करते रहें। इसका सबसे बड़ा स्वाद या कहें प्रभाव यह है कि हम बाहर से सक्रिय होते हैं और भीतर से शांत रहने लगते हैं। इतना अच्छा वर्तमान कौन नहीं चाहेगा। वर्तमान से जुड़ने, उसको ठीक से भोगने के लिए एक बहुत अच्छा प्रयोग है सांस का। अपनी हर आती–जाती सांस के प्रति जितने होश पूर्ण होंगे, वर्तमान को उतने अच्छे–से भोग सकेंगे। इसलिए जब भी समय मिले, कमर सीधी, आंखें बंद कर अपनी सांस को भीतर जाते, बाहर आते हुए देखिए। कोई कठिन काम नहीं है यह। बड़ा आसान है, और पाएंगे वर्तमान हमारी मुट्ठी में है। चूंकि हमें वर्तमान में जीना है, तो भूत यानी अतीत को भी समझना होगा। तो चलिए, थोड़ा इसे भी समझ लेते हैं।

2. **भूत**– भूतकाल सबका अपना–अपना है। यह जिंदा ही स्मृतियों के कारण है। दुनिया में जितने भी बोझ हैं, उनमें सबसे बड़ा स्मृति का बोझ है। यादों की लंबी सूची हर एक के पास होती है और उनको यदि बोझ बना लें तो जीवन की चाल लड़खड़ाना ही है। उसी का नाम अशांति है। भूतकाल और भविष्यकाल ये सब हमारी सुरक्षा के इंतजाम हैं। हम बहुत डरे हुए हैं तो अतीत उस डर को अशांति में बदलता है, भविष्य का चिंतन और बेचैन कर देता है। फिर हम सोचते हैं परेशानी पैदा हुई है तो इलाज भी यहीं मिलेगा, लेकिन भयमुक्त होने के लिए एक ही रास्ता है– वर्तमान पर टिक जाना। यह भी तय है कि भूत–भविष्य से पूरी तरह से कोई कट नहीं सकता। तो जब भूतकाल में हों, तीन काम करें...पहला– भूलें, दूसरा– भूल सुधारें और तीसरा– अनुभव लें।

क) **भूलें**– अपने अतीत को भूल जाएं। इसे जितना याद रखेंगे, उतने अधिक परेशान होंगे। भूत को भूलने के लिए मन को स्थिर करना होगा और यहां काम आएगा ध्यान यानी मेडिटेशन। जब हम ध्यान में उतरते हैं तो अपने भूतकाल को भूल रहे होते हैं।

ख) **भूल सुधारें**– भूतकाल का सबसे बड़ा लाभ यह उठाएं कि जिंदगी में जो भूलें की हैं, उनको सुधारें। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने जिंदगी में कोई भूल नहीं की। भूल सबसे होती है। जो भूलें हुई हैं, वे एक स्टॉक बनकर भूतकाल में चली गईं। जैसे बैंकों में लॉकर होते हैं, ऐसे ही हमारे भूतकाल में अलग–अलग क्षेत्र की गलतियों के खाने बने हुए हैं। परिवार, निजी जीवन, व्यापार–व्यवसाय में या समाज के प्रति गलती की है तो उन भूल या गलतियों को वर्तमान में सुधारते चलिए।

ग) **अनुभव लें**– भूतकाल से यदि कुछ लिया जा सकता है तो वह है अनुभव। ध्यान रखिएगा, सिर्फ अनुभव ही लेना है, यादें नहीं। स्मृति और अनुभव में अंतर है। जैसे किसी व्यक्ति की जान जा रही हो तो उसका शरीर बड़ा निरीह–मजबूर हो जाएगा। स्मृतियां ऐसे ही शरीर की तरह हैं और उनके भीतर जो सांसें हैं, वे अनुभव की तरह हैं। अपने अनुभव पर काम करिए। हर स्मृति में से कोई अच्छा–सा अनुभव निकाल लीजिए। यहां लोग गलती करते हैं। अनुभव ढूंढने की जगह स्मृतियों में खो जाते हैं। इसलिए भूतकाल को भूलना ही भूतकाल की समझ है और भूतकाल की समझ ही वर्तमान को स्वस्थ व ताजा बनाएगी। हमने वर्तमान को समझा, भूत को जाना। चलिए, थोड़ा भविष्य को भी टटोल लेते हैं।

3. **भविष्य**– प्रकृति में मनुष्य ही ऐसा है जो भविष्य को देख सकता है, उसे वर्तमान में बदलने से पहले संवार सकता है। यूं तो मनुष्य और पशु में बहुत फर्क है, लेकिन पशु के पास भविष्य की कोई समझ नहीं है। इसीलिए पशुओं को तिर्यक कहते हैं। यानी पशु का सिर, हृदय, पेट और इंद्रियां धरती के समानांतर होती हैं और इसीलिए वह चार पैरों से चलता है। मनुष्य दो पैर से चलता है, इसलिए उसका सिर, हृदय, पेट और इंद्रियां क्रम से ऊपर से नीचे होती हैं और इसीलिए उसके पास संभावना है कि वह अपनी जीवन ऊर्जा को नीचे से ऊपर उठा सकता है। जैसे–जैसे जीवन ऊर्जा ऊपर उठती है और उठते–उठते दोनों भौंहों के बीच (आज्ञा चक्र पर) आती है कि हम भविष्य द्रष्टा हो जाते हैं। यहां से हम अपने भविष्य को बहुत अच्छे से देख सकते हैं। तो भविष्य के प्रति भी तीन काम करने होंगे... पहला– दूरदर्शिता, दूसरा– सावधानी और तीसरा–योजनाबद्धता।

क) **दूरदर्शिता**– दूरदर्शी होने के लिए जब भी समय मिले, पूरा ध्यान दोनों भौंहों के बीच केंद्रित कर भीतर देखिएगा। योग की भाषा में इसे आज्ञाचक्र कहा गया है और सामान्य भाषा में तीसरा नेत्र। जब दो आंखें बंद कर ध्यान में उतरते हैं तो यह तीसरी आंख जाग्रत हो जाती है और इससे हम भविष्य में झांक सकते हैं। इसी को दूरदर्शिता कहते हैं। दूरदर्शिता का दूसरा अर्थ है अपने सपनों में से सच को निचोड़ लेना, बदलाव पर लगातार नजर रखना।

ख) **सावधानी**– भविष्य के प्रति सबसे बड़ी सावधानी तो यह रखना है कि हमारा भविष्य भूत और वर्तमान से हमेशा ऊंचा ग्राफ लिए हो। यानी आने वाला कल जो कि कुछ समय बाद हमारा आज बन जाएगा, इसके ग्राफ में हमेशा ऊंचाई हो। सीधी–सी बात है हर आने वाला कल आज से ऊंचा होना चाहिए। इसको लेकर बहुत सावधान रहिए।

ग) **योजनाबद्धता**– अपने भविष्य के प्रति प्लानिंग, एक इमेजिनेशन बहुत योजनाबद्ध ढंग से करिए। दुनिया में सबसे योजनाबद्ध होने का ढंग ही योग है। योग का धर्म से कोई लेना–देना नहीं है। इसका संबंध जीवन और उसकी शांति से है। जितना योग–ध्यान आज करेंगे, आने वाले कल पर उतनी ही अच्छी पकड़ हो जाएगी। तो अतीत से कटना, भविष्य से जुड़ना वर्तमान के लिए आनंद जैसा है, बशर्ते इस बात की समझ विकसित हो जाए कि करना कैसे है। जैसे–जैसे मनुष्य की उम्र बढ़ती है, वह पूरी ताकत से या तो अपने अतीत से चिपक जाता है, या भविष्य के अज्ञात भय में डूब जाता है। बच्चे के लिए न तो अतीत का महत्व होता है, न भविष्य का। बस, उसके वर्तमान में धीरे–धीरे अतीत प्रवेश कर रहा होता है। एक बच्चा भविष्य को लेकर बहुत अधिक जागरूक नहीं होता, लेकिन जवानी आते–आते अतीत अपना काम कर चुका होता है और भविष्य उसके लिए चुनौती बन जाती है। इसलिए जवानी वर्तमान को जीने लगती है। बूढ़ों के साथ दिक्कत यह है कि पीछे का छूटता नहीं, आगे का डराता है, तो उनका भी आज यानी वर्तमान बिगड़ने लगता है। इसीलिए हमने देखा है कि जीवनभर दृढ़ निष्ठावान, विद्वान और धार्मिक रहे लोग बुढ़ापे में आंसू बहाते मिलते हैं। अच्छे–अच्छे समझदार युवा वर्तमान में डिप्रेशन में डूब जाते हैं और बचपन चिड़चिड़ा होकर झल्लाहट में उतर गया है। इसलिए उम्र के इन तीनों पड़ाव को यह समझना होगा कि यदि वर्तमान संवारना है तो आत्मा को अनुभूत करने का अभ्यास करते रहिए। हम केवल शरीर नहीं हैं, सिर्फ मन से भी संचालित नहीं हैं। हम आत्मा हैं। सुनने में बात कठिन लगती है, करने में बड़ी आसान और जीने में आज यानी वर्तमान को आनंद से भर देने वाली है।

पुरस्कृत निबंध

सूचना प्रौद्योगिकी एवं 21वीं सदी की हिंदी

किरन सिंह
भूवैज्ञानिक, भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी, ऋषिकेश

लेख

इक्कीसवीं सदी तेजी से नवीनतम प्रौद्योगिकी की ओर बढ़ रही है। आज का युग वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्रांति का युग है.....सूचना, संचार एवं विचारों का युग है। प्रौद्योगिकी एवं तकनीक की अभूतपूर्व प्रगति, सूचना –क्रांति का तीव्र विस्फोट, कम्प्यूटर, मोबाइल एवं इंटरनेट के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को प्रभावित किया है। सूचना क्रांति ने पूरे भूमंडल को समेटकर छोटा कर दिया है और राष्ट्र की सीमाओं से ऊपर उठकर पूरे विश्व को एक गांव, एक परिवार बना दिया है।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं इसका महत्व :–

सूचना का अर्थ उस आवश्यक ज्ञान से है जो मनुष्य समाज के विकास के लिए नए मार्ग खोलता है। सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी उपकरणों के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया और संप्रेषण करता है। इस नवीन प्रौद्योगिकी ने इंटरनेट के माध्यम से एक नई दुनिया को जन्म दिया है। यह नई दुनिया है वेब जगत की। सूचना–प्रौद्योगिकी के विकास से आज का संसार अत्यंत सहज और तीव्र हो गया है।

सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व :–

- ''एक विश्व, एक गांव'' की परिकल्पना को साकार करने में सहायक।
- सांस्कृतिक एवं भौगोलिक दूरी घटाने में सहायक।
- वाणिज्य एवं व्यापार का अभिन्न अंग।
- रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराने में सहायक।
- सूचना के माध्यम से सशक्तिकरण।
- भ्रष्टाचार कम करने में सहायक।
- नीति निर्धारण एवं निर्णय लेने में सहायक।
- शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, प्रशासन, अनुसंधान एवं विकास में प्रभावी भूमिका।

भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार :–

भारत ने विज्ञान, तकनीक एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का वर्चस्व तेजी से बढ़ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी आज शक्ति एवं विकास का प्रतीक बन गया है। आज के इस नए भारत में ई–कॉमर्स, ई–एजुकेशन, ई–बैंकिंग, ई–मेडिसिन, ई–गवर्नेंस, ई–शॉपिंग आादि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का विस्तार गांव–गांव तक हो चुका है। आज भारत में 'डिजिटल इंडिया' जैसे कार्यक्रमों को बढ़–चढ़कर बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसका उद्देश्य देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में परिणित करना है।

सूचना क्रांति और हिंदी :–

आज कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो तीव्रगामी प्रगति हुई है वो भाषा में भी एक मौन क्रांति का वाहक बनकर आई है। आज भाषा को न केवल मनुष्यों की जरूरतों को पूरा करना है बल्कि कम्प्यूटर व मशीनों की नई भाषाई मांगों को भी पूरा करना पड़ रहा है। मुक्त बाजार और वैश्वीकरण के युग में आज तकनीकी विकास को आम आदमी

के नजदीक पहुंचाने की आवश्यकता बढ़ गई है और इस कार्य में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, क्योंकि यह भारत जैसे बहुभाषी देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है और इसकी पकड़ आम जनमानस तक है। कम्प्यूटर में हिंदी की बढ़ती संभावनाओं को ध्यान में रखकर इलेक्ट्रॉनिक विभाग ने भारतीय भाषाओं के लिए 'टेक्नोलॉजी विकास' नामक परियोजनाओं के अंतर्गत कई प्रोजेक्ट शुरू किए हैं, जिसमें आईआईटी कानपुर और सी–डैक की प्रमुख भूमिका है। आज विंडोज प्लेटफॉर्म में काम करने वाले अनेक हिंदी सॉफ्टवेयर बाजार में उपलब्ध हैं। माइक्रोसॉफ्ट, याहू, रेडिफ, गूगल आदि विदेशी कंपनियों ने भी अपनी वेबसाइट पर हिंदी भाषा को स्थान दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी की संभावनाएं काफी अच्छी हैं और इस क्षेत्र में हिंदी का प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ रहा है।

हिंदी ही क्यों ?

सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार से निर्मित नए जगत में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्व की सबसे ज्यादा युवा आबादी भारत में ही है। यहां दुनिया की लगभग 21 प्रतिशत युवा आबादी निवास करती है। भविष्य में यह आबादी अपने ज्ञान एवं कौशल के बल पर पूरे विश्व में अपनी पैठ जमाने में सक्षम होगी। तब भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली हिंदी भाषा ही वैश्विक परिदृश्य पर होने वाले इस परिवर्तन को सुगम बनाएगी।

वर्तमान में हिंदी भाषा लगभग 175 देशों में अपना स्थान बना चुकी है। विश्व के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। विश्व की तीन प्रमुख भाषाओं में हिंदी भी सम्मिलित है। अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र ने अपने यहां एमबीए के छात्रों के लिए एक वर्षीय हिंदी पाठ्यक्रम अनिवार्य कर दिया है। इस प्रकार हिंदी एक वैश्विक भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है।

हिंदी एक सशक्त भाषा है जिसका आधार वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत व्याकरण है। इसकी लिपि (देवनागरी) कम्प्यूटर यंत्र की प्रक्रिया के अनुकूल है। इसमें विश्व की किसी भी भाषा एवं ध्वनि का लिप्यांकन किया जा सकता है। विश्व में अब उसी भाषा को प्रधानता मिलेगी जिसका व्याकरण तर्कसंगत होगा तथा जिसकी लिपि कम्प्यूटर की लिपि होगी। माइक्रोसॉफ्ट प्रमुख बिल गेट्स ने भी स्वीकार किया है कि कम्प्यूटर की भाषा हिंदी हो सकती है क्योंकि रोमन लिपि की तुलना में देवनागरी लिपि अधिक वैज्ञानिक है। हिंदी ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से सरल भाषा है, उसमें जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है।

आज तकनीकी विकास और सामाजिक विकास एक दूसरे के पूरक बन गए हैं। ऐसे समय में तकनीकी भाषा को आम आदमी तक पहुंचाने की आवश्यकता बढ़ गई है। इस कार्य में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योंकि यह आज जनसंपर्क की भाषा है और इसकी पकड़ आम जनमानस तक है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई भारत की तरक्की बेमानी है यदि गांव–कस्बों में रहने वाली अधिकांश आबादी को उसका लाभ न मिले। ग्रामीण संदर्भ में सूचना प्रौद्योगिकी से होने वाले लाभ बहुआयामी है। यह देश के समग्र विकास के लिए अति आवश्यक है। ग्रामीण, पिछड़े और निर्धन वर्ग के लोगों को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सशक्त, सक्षम व स्वावलंबी बनाया जा सकता है और इस कार्य को सहज और सुगम बनाने का दायित्व हिंदी भाषा से ज्यादा और कौन पूरा कर सकता है?

चौकसी

राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति

विशालाक्षी मालान
प्रबंधक (पीएसपी) एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

लेख

राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति या नीति (NSS) किसी देश के लिए नागरिकों की बुनियादी जरूरतों और सुरक्षा चिंताओं को पूरा करने और देश के बाहरी और आंतरिक खतरों का समाधान करने का महत्वपूर्ण ढांचा है।

हालांकि, भारत इस दिशा में काफी प्रयास कर रहा है परन्तु अभी भी हमारे पास ऐसी व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति (NSS) नहीं है जो देश की सुरक्षा के लिए चुनौतियों का व्यापक आकलन कर उनसे प्रभावी ढंग से निपटने के लिए नीतियों का निर्माण करती हो!

पूर्ण परिभाषित राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति उस पथ का एक स्पष्ट दृष्टिकोण है जिसे भारत को अपनी राष्ट्रीय दृष्टि की प्राप्ति के लिए अपनाना चाहिए। यह देश के सभी अंगों को उन नीति–निर्देशों पर एक मार्गदर्शिका भी प्रदान करता है जिनका उन्हें पालन करना चाहिए।

ऐसी रणनीति को भारत के संविधान और देश की लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था द्वारा निर्धारित मापदंडों के भीतर क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

क्या है राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति?

परिचय :

- ❖ राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति दस्तावेज देश के सुरक्षा उद्देश्यों और इन्हें प्राप्त करने के लिये अपनाए जाने वाले तरीकों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।
- ❖ एनएसएस को पारंपरिक (केवल राज्य को प्रभावित करने वाले) और गैर–पारंपरिक (राज्य, व्यक्ति और संपूर्ण मानवता को प्रभावित करने वाले) दोनों तरह के खतरों पर विचार करना होगा। इसके साथ ही, इसे भारत के संविधान और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के ढाँचे के भीतर कार्य करना होगा।
- ❖ इस रणनीति में प्रायः संभावित खतरों का आंकलन, संसाधन आबंटन, राजनयिक एवं सैन्य कार्रवाइयाँ और खुफिया सूचना, रक्षा एवं अन्य सुरक्षा–संबंधी क्षेत्रों से संबंधित नीतियाँ शामिल होती हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति रखने वाले देश :

- ❖ संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और रूस जैसे उन्नत सैन्य एवं सुरक्षा संरचनाएँ रखने वाले विकसित देशों ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीतियाँ क्रियान्वित कर रखी हैं।
- ❖ चीन भी एक व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति रखता है, जबकि पाकिस्तान ने भी राष्ट्रीय सुरक्षा नीति 2022–2026 जारी की है।

राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति दस्तावेज के लिये प्रस्तावित रूपरेखा : एक राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति दस्तावेज में निम्नलिखित तत्व होने चाहिए:

- ❖ राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा उद्देश्यों की एक कार्यशील परिभाषा,
- ❖ विश्व में हो रहे भू–राजनीतिक परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए उभरते सुरक्षा माहौल पर विचार करना,
- ❖ चुनौतियों से निपटने में देश की राष्ट्रीय शक्तियों और कमजोरियों का आंकलन,
- ❖ चुनौतियों से निपटने के लिये आवश्यक सैन्य, आर्थिक, राजनयिक संसाधनों की पहचान करना।

भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति की क्या आवश्यकता है?

- ❖ एक आधुनिक राज्य अनेक क्षेत्रों में एक साथ चुनौतियों का सामना करता है।
- ❖ राष्ट्रीय सुरक्षा को घरेलू और बाहरी खतरों पर काबू पाने के लिए राज्य की बलपूर्वक शक्ति के उपयोग तक सीमित नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, आर्थिक और सामाजिक शिकायतों से घरेलू शांति और स्थिरता को खतरा उत्पन्न हो सकता है।
- ❖ बिना सोचे–समझे की गई प्रतिक्रिया से ये शिकायतें अनसुलझी रह सकती हैं जबकि बलपूर्वक शक्ति का प्रयोग स्थिति को सुधारने के बजाय और बढ़ा देता है। उदाहरण के लिए भारत में वामपंथी उग्रवाद की जड़ें जनजातीय आबादी के लगातार शोषण में निहित हैं।

रणनीतिक अनिश्चितता का युग:

- ❖ शीत युद्ध की समाप्ति ने एक जटिल और अप्रत्याशित वैश्विक परिदृश्य तैयार किया है, जिसमें संभावित विरोधियों की संख्या बढ़ रही है और सशस्त्र बलों के लिये मिशनों का विस्तार हो रहा है।
- ❖ प्रमुख चुनौतियों में आतंकवाद, जातीय विविधता, छोटे हथियारों का प्रसार, नशीले पदार्थों की तस्करी और धार्मिक उग्रवाद शामिल हैं, जिन पर सतर्कता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

परमाणु सुरक्षा और भू–राजनीतिक बदलाव:

- ❖ परमाणु निवारण/निरोध (nuclear deterrence) का भविष्य भारत की सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारत लंबे समय से अपने पड़ोस में चीन और पाकिस्तान की परमाणु क्षमताओं को लेकर चिंतित रहा है।
- ❖ भारत ने हिंद महासागर में अवस्थित डिएगो गार्सिया द्वीप में अमेरिकी परमाणु हथियारों की मौजूदगी के बारे में भी चिंता व्यक्त की है। भारत के परमाणु निरोध को प्रौद्योगिकीय परिवर्तन और भू–राजनीतिक बदलावों के अनुकूल होने की आवश्यकता है।

उभरता हुआ हिंद–प्रशांत सुरक्षा ढाँचा:

- ❖ शक्ति संतुलन उत्तरी अमेरिका और यूरोप से हटकर हिंद–प्रशांत क्षेत्र की ओर स्थानांतरित हो रहा है, जो अब गुरुत्व का नया रणनीतिक केंद्र बन रहा है।
- ❖ उभरता सुरक्षा ढाँचा हिंद–प्रशांत क्षेत्र में 'सहकारी सुरक्षा' (cooperative security) के आव्यूह के भीतर 'प्रतिस्पर्धी सहयोग' (competitive cooperation) की कल्पना करता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा अवसंरचना को सुदृढ़ करने की आवश्यकता:

- ❖ राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (NSC) अपनी सलाहकारी भूमिका तक सीमित रहा है और उसका अधिक लाभ नहीं उठाया जा सका है।
- ❖ राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की अधिकारिता को सशक्त बनाने की प्रबल आवश्यकता है।

भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के कौन–से संभावित लाभ प्राप्त हो सकते हैं?

- ❖ **व्यापक दृष्टिकोण**– एनएसएस समग्र तरीके से आंतरिक और बाह्य दोनों तरह की विभिन्न सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिये एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है।
- ❖ **स्पष्ट उद्देश्य**– यह स्पष्ट सुरक्षा उद्देश्यों को रेखांकित करता है, उन हितों को परिभाषित करने में मदद करता है जिन्हें सुरक्षा की आवश्यकता होती है और संभावित खतरों की पहचान करता है।
- ❖ **नीति मार्गदर्शन**– एनएसएस नीति मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे सरकार को राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा के लिये रणनीतियों एवं नीतियों का निर्माण करने और उन्हें प्रवर्तित करने में मदद मिलती है।

- **प्राथमिकताकरण**– यह सुरक्षा चिंताओं को प्राथमिकता प्रदान करने में मदद करता है, सबसे महत्वपूर्ण विषयों के लिए संसाधनों एवं प्रयासों के आबंटन को सक्षम बनाता है।
- **संसाधन आबंटन**– यह संसाधन आवंटन में सहायता करता है, जिससे सुरक्षा बढ़ाने के लिये वित्तीय एवं मानव संसाधनों का कुशल उपयोग संभव हो पाता है।
- **निवारण/निरोध**– एनएसएस राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये एक स्पष्ट एवं सुविचारित दृष्टिकोण प्रदर्शित कर संभावित विरोधियों के निरोध (Deterrence) में मदद कर सकता है।
- **संपूर्ण–सरकार दृष्टिकोण**– एनएसएस विभिन्न सरकारी विभागों और एजेंसियों को शामिल करते हुए सुरक्षा से संबंधित मामलों में समन्वय एवं सहयोग सुनिश्चित कर 'संपूर्ण–सरकार' दृष्टिकोण (Whole & of & Government Approach) को बढ़ावा देता है।
- **सार्वजनिक जागरूकता** – एनएसएस के तत्वों को जनता के साथ साझा किया जा सकता है, इस प्रकार, राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सकती है और सार्वजनिक समर्थन हासिल किया जा सकता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय संलग्नता**– एनएसएस सुरक्षा मामलों पर अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ भारत की संलग्नता/सहभागिता का मार्गदर्शन कर सकता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के विकास से संबद्ध प्रमुख चुनौतियाँ :

- **कानूनी ढाँचा**– यह सुनिश्चित करना कि एनएसएस अंतर्राष्ट्रीय समझौतों और घरेलू कानूनों सहित मौजूदा कानूनी ढाँचे का अनुपालन करे, आवश्यक तो है लेकिन यह जटिल सिद्ध हो सकता है।
- **संसाधन आबंटन**– एनएसएस को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिये वित्तीय और मानव, दोनों आवश्यक संसाधनों का आबंटन चुनौतीपूर्ण हो सकता है, विशेष रूप से जब बजट के लिये प्रतिस्पर्धी मांगें हों।
- **बदलते खतरे का परिदृश्य**– साइबर खतरों, आतंकवाद और गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों जैसे उभरते सुरक्षा खतरों से निपटने के लिये एनएसएस को अनुकूलित करना एक निरंतर चुनौती का विषय है।
- **प्रतिक्रियाशील दृष्टिकोण**– भारत ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये प्रायः प्रतिक्रियाशील दृष्टिकोण अपनाया है, जहाँ एक सक्रिय एवं व्यापक रणनीति के बजाय सुरक्षा चुनौतियों के उत्पन्न होने पर उनका समाधान किया जाता है।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा संस्कृति**– एक राष्ट्रीय सुरक्षा संस्कृति का निर्माण करना, जो एनएसएस के महत्त्व और सुरक्षा के बारे में व्यवस्थित सोच पर बल दे, एक क्रमिक प्रक्रिया रही है।

राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का मसौदा तैयार करने के भारत के प्रयास में सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, जिसमें एक अच्छी तरह से संरचित और अनुकूलनीय रणनीतिक ढांचे को सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्थित योजना और कठोर परामर्श के महत्व पर जोर दिया जाना चाहिए। हालाँकि, इसके पूरा होने की कोई निश्चित समय–सीमा नहीं है, लेकिन इसकी प्रभावशीलता और दीर्घकालिक सफलता के लिए रणनीति तैयार करने में व्यवस्थित और विचारशील दृष्टिकोण आवश्यक है।

हिंदी ऐसी, माँ के माथे की बिंदी जैसी !

लेख

आशुतोष कुमार आनंद
वरिष्ठ प्रबंधक (निदेशक कार्मिक सचिवालय)

जब जन्म हुआ तो बताया गया कि जन्म होते ही नर्स ने जोर से पीठ थपथपाया, यह जानने के लिए कि मैं रोता हूँ या नहीं। जब किलकारी गूंजी तो सबको सुकून आया कि बच्चे की जबान है, पर बोलना तब कहाँ आता था। धीरे–धीरे जब थोडा बड़ा हुआ तो सबसे पहला शब्द जो बोलना सीखा वो था "माँ"। पहला शब्द सिखाने वाली भी माँ, जो शब्द निकला, वो भी माँ और जिस भाषा में वह शब्द निकला वो हिंदी और वो भी "माँ"।

जब उस उम्र में पहुंचा, जब पढ़ाई के लिए स्कूल की यात्रा तय करनी थी। तब तक सिर्फ एक ही भाषा आती थी और वो थी हिंदी, पर जब स्कूल में गया तो मालूम हुआ कि हिंदी स्कूल में नहीं बोलनी है, बल्कि हिंदी बोलते हुए पकडे जाने पर सजा का प्रावधान था। किताबें सारी अंग्रेजी में, क्लास में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी और बोलचाल की भाषा भी अंग्रेजी। हिंदी कही खो गयी, अब सिर्फ घर और स्कूल के बाद दोस्तों से संवाद तक सिमटकर रह गयी हिंदी।

घर पर भी इस बात का दबाब बनाया जाने लगा कि अगर अंग्रेजी अच्छी करनी है तो घर पर भी अंग्रेजी में ही बातचीत की जाये और स्कूल और घर दोनों में ऐसा माहौल बना दिया गया, जैसे अगर अंग्रेजी नहीं आएगी जो जीवन मुश्किल हो जायेगा। इस अंतर्द्वंध से गुजरते हुए स्कूल से कॉलेज, कॉलेज से विश्वविद्यालय और फिर विश्वविद्यालय से प्रतिष्ठान तक की यात्रा पूरी हुई। इस यात्रा में यह देखा कि हिंदी जो मेरी पहली जबान थी, जिस भाषा में मैंने बोलना सीखा वो दोयम दर्जे की बनकर रह गयी, हिंदी में बात करना, हिंदी में संवाद करना बहुत कम हो गया, बल्कि कई बार तो हीन भावना से ग्रसित भी हुआ, अगर लच्छेदार अंग्रेजी बोलने में त्रुटि हुई हो या नहीं बोला गया।

आज जब सरकारें हिंदी भाषा के उत्थान के लिए प्रयासरत और संघर्षरत हैं, तब ऐसा लगता है कि क्या सिर्फ सरकारी प्रयासों से या कुछ नियमावली या दिशानिर्देशों, काव्य गोष्ठियों या सम्मेलनों से वास्तविक दशा में सुधार आ पायेगा। जब तक मनस्थिति और यह सोच नहीं बदलती कि निज भाषा का प्रयोग और अच्छी हिंदी बोलना भी उतना ही प्रशंसनीय है जितना कि अंग्रेजी का ज्ञान।

कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान होना उत्तम माना जाता है, पर सिर्फ कार्यसाधक ज्ञान या कार्यालयों में सिर्फ हिंदी में काम कर लेने भर से हिंदी का उत्थान संभव नहीं। हिंदी के प्रति सम्मान, हिंदी को बराबरी का दर्जा देना और हिंदी में कार्य करने एवं बोलने वालों का भी सम्मान, हिंदी के प्रति भाव जगायेगा एवं लोगों को प्रोत्साहित करेगा कि वो हिंदी बोलने एवं हिंदी में कार्य करने में कोई संकोच न करें।

यह समझना होगा कि अंग्रेजी का प्रयोग किसी श्रेष्ठता का प्रतीक नहीं है और हिंदी दुनिया की किसी भी भाषा से कमतर नहीं है। माननीय प्रधानमंत्री जी अपने सार्वजनिक भाषणों और अनेक विश्वमंचों पर हिंदी का प्रयोग करते हैं, इससे हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी है। जब दूसरे देश के राष्ट्रध्यक्ष अपनी राष्ट्रभाषा में संबोधन कर सकते हैं तो भारत में क्यों नहीं। विश्व समुदाय को दुनिया की सबसे प्राचीन और वैज्ञानिक भाषाओं में से एक, हिंदी के बारे में अब ज्यादा पता चला है।

मातृभाषा इंसान के लिए एक पहचान होती है। अगर आपके पास अपनी मातृभाषा है तो समाज में यह समझा जाता है कि वैश्विक स्तर पर आपकी संस्कृति की एक पहचान है, एक वजूद है। आपके पास अपने समाज में अपनी बात उठाने का एक सशक्त हथियार है लेकिन कई बार लोग तथाकथित आधुनिकता के रंग में सभ्य और प्रगतिशील दिखने की चाह में, अपनी मातृभाषा को सार्वजनिक स्थलों पर बोलने में शरमाते हैं, जो बेहद अशोभनीय व्यवहार है। आज कई लोग भारत की मातृभाषा यानि हिन्दी को बोलने में शरमाते हैं, हिन्दी बोलने वालों को गंवार समझा जाता है। ऐसे तथाकथित लोगों के लिए ही महात्मा गांधी जी ने कहा था कि "मातृभाषा का अनादर मां के अनादर के बराबर है।"

हिंदी पखवाड़ों का आयोजन एक सांकेतिक पहल है, हिंदी के प्रति सजगता बढ़ाने की, पर सिर्फ हिंदी पखवाड़ों के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के मात्र आयोजन से हिंदी का उत्थान एवं हिंदी का विकास संभव नहीं है, समय की जरुरत है कि हिंदी के इस्तेमाल को लेकर सार्वभौमिक पहल एवं जागरूकता की। हिंदी हिंदुस्तान की अस्मिता है, पहचान है, सबसे बडे भूभाग की भाषा है, इसकी अन्य भाषाओं से कोई प्रतिद्वंता नहीं है, बल्कि इसे आदर सम्मान देते हुए इसके इस्तेमाल को बढ़ाना है। वहीं देश की अन्य प्रांतीय भाषाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ये भाषाएं सुंदर पुष्प के समान हैं। हिंदी भाषा इन सबको पिरोकर सुंदर माला का निर्माण करती है और यह हमारे भारत के श्रृंगार और आभूषण की भांति है। यह समझना होगा की सिर्फ लच्छेदार अंग्रेजी बोल देने भर से किसी की विद्वता साबित नहीं होती बल्कि निजभाषा पर अच्छी पकड़ और उसका इस्तेमाल भी आपकी विद्वता का परिचायक है।

हिंदी विश्व की इकलौती ऐसी भाषा है जिसके पास समृद्ध शब्दकोष है, हिंदी में दूसरी भाषाओं को आत्मसात करने की भी क्षमता है। हिंदी अभिव्यक्ति, संप्रेषण एवं जोड़ने की भाषा है, भारत के करीब 12 राज्यों में हिंदी बोली जाती है एवं हिंदी का स्वाधीनता संग्राम में अतुलनीय योगदान रहा है। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति का प्रतीक उसकी मातृभाषा होती है। हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति का प्राण है जो पूरे देश को एक सूत्र में जोड़े रखती है। हिंदी वर्णमाला में कोई कैपिटल या स्माल नहीं होता और हिंदी की बिंदी भी बहुत कुछ बोलती है। भाषा संस्कृति की संवाहिका है। अपनी भाषा ही भावों की बेहतर अभिव्यक्ति होती है। किसी भी देश का विकास तभी संभव है जब उसके पास एक सशक्त भाषा हो और हिंदी एक सशक्त भाषा है।

हिंदी की सेवा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग एवं इसकी स्वीकार्यता से ही होगी, हिंदी देश को जोड़ने वाली भाषा बने, इसे सिर्फ किसी राज्य विशेष की भाषा के रुप में देखे जाने से बचना होगा। वर्तमान और आने वाली पीढ़ी को जब हम धरोहर के रूप में कुछ सौप रहे हों तो हिंदी भी उसमे एक धरोहर के रूप में अवश्य शामिल हो।

हास-परिहास

पति : तुम बहुत प्यारी हो।
पत्नी : Thanks
पति : तुम बिल्कुल राजकुमारी जैसी दिखती हो।
पत्नी : Thank you so much और बताओ क्या कर रहे हो?
पति : मजाक !

चोर ने एक आदमी को बाजार में घेर लिया –
आदमी : मुझे घर जाने दो।
चोर : तेरी जेब में जितना भी पैसा है सब निकाल के दे दो।
आदमी : भाईसाहब जेब तो खाली है कहो तो Paytm कर दूं।

टीचर : संजू यमुना नदी कहां बहती है?
संजू : जमीन पर।
टीचर : नक्शे में बताओ, कहां बहती है?
संजू : नक्शे में कैसे बह सकती है, नक्शा गल नहीं जाएगा।

एक लड़की ने पिज्जा शॉप में जा कर पिज्जा आर्डर किया।
वेटर : मैडम, इसके 4 पीस करूं या 8 पीस?
लडकी बोली : 4 पीस ही कर दो, 8 खाऊंगी तो मोटी हो जाऊंगी।

टीचर : देश के सबसे ईमानदार, पुलिस वाले कहां पाये जाते हैं?
राजू : सावधान इंडिया और क्राइम पेट्रोल में।

ग्राहक : बेटा तेरे पापा की तो रसगुल्ले की दुकान है, तेरा खाने को मन नहीं करता?
बच्चा : बहुत मन करता है अंकल....लेकिन पापा गिनकर रखते हैं, इसलिए बस चूसकर वापिस रख देता हूं।

गिलोय के औषधीय गुण

टाटा 1 एमजी से साभार संकलित

स्वास्थ्य परिचर्चा

गिलोय एक प्रकार की बेल है जो आमतौर पर जंगलों–झाड़ियों में पाई जाती है। प्राचीन काल से ही गिलोय को एक आयुर्वेदिक औषधि के रुप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। गिलोय के फायदों को देखते हुए ही हाल के कुछ सालों से अब लोगों में इसके प्रति जागरुकता बढ़ी है और अब लोग गिलोय की बेल अपने घरों में लगाने लगे हैं। आमतौर पर गिलोय का सेवन तीन रूपों में किया जा सकता है : गिलोय सत्व, गिलोय जूस या गिलोय स्वरस और गिलोय चूर्ण। आजकल बाज़ार में गिलोय सत्व और गिलोय जूस आसानी से उपलब्ध हैं।

गिलोय के फायदे :

गिलोय डायबिटीज, कब्ज़ और पीलिया समेत कई गंभीर बीमारियों के इलाज में उपयोगी है। गिलोय के गुणों के कारण ही आयुर्वेद में इसका नाम अमृता रखा गया है जिसका मतलब है कि यह औषधि बिल्कुल अमृत समान है। आयुर्वेद के अनुसार पाचन संबंधी रोगों के अलावा गिलोय सांस संबंधी रोगों जैसे कि अस्थमा और खांसी से भी आराम दिलाने में काफी फायदेमंद है। इसे किसी योग्य चिकित्सक की सलाह से लेना लाभकारी हो सकता है।

1. **डायबिटीज** : विशेषज्ञों के अनुसार गिलोय हाइपोग्लाईसेमिक एजेंट की तरह काम करती है और टाइप–2 डायबिटीज को नियंत्रित रखने में असरदार भूमिका निभाती है। गिलोय जूस ब्लड शुगर के बढ़े स्तर को कम करती है, इन्सुलिन का स्राव बढ़ाती है और इन्सुलिन रेजिस्टेंस को कम करती है। इस तरह यह डायबिटीज के मरीजों के लिए बहुत उपयोगी औषधि है।
2. **डेंगू** : डेंगू से बचने के घरेलू उपाय के रुप में गिलोय का सेवन करना सबसे ज्यादा प्रचलित है। डेंगू के दौरान मरीज को तेज बुखार होने लगता हैं। गिलोय में मौजूद एंटीपायरेटिक गुण बुखार को जल्दी ठीक करते हैं, साथ ही यह इम्युनिटी बूस्टर की तरह काम करती है जिससे डेंगू से जल्दी आराम मिलता है।
3. **अपच** : अगर आप पाचन संबंधी समस्याओं जैसे कि कब्ज़, एसिडिटी या अपच से परेशान रहते हैं तो गिलोय आपके लिए बहुत फायदेमंद साबित हो सकती है। गिलोय का काढ़ा, पेट की कई बीमारियों को दूर रखता है। इसलिए कब्ज़ और अपच से छुटकारा पाने के लिए गिलोय का रोजाना सेवन करें।
4. **खांसी** : अगर कई दिनों से आपकी खांसी ठीक नहीं हो रही है तो गिलोय का सेवन करना फायदेमंद हो सकता है। गिलोय में एंटीएलर्जिक गुण होने के कारण यह खांसी से जल्दी आराम दिलाती है। खांसी दूर करने के लिए गिलोय के काढ़े का सेवन करें।
5. **बुखार** : गिलोय में ऐसे एंटीपायरेटिक गुण होते हैं जो पुराने से पुराने बुखार को भी ठीक कर देती है। इसी वजह से मलेरिया, डेंगू और स्वाइन फ्लू जैसे गंभीर रोगों में होने वाले बुखार से आराम दिलाने के लिए गिलोय के सेवन की सलाह दी जाती है।
6. **इम्युनिटी बढ़ाने में सहायक** : बीमारियों को दूर करने के अलावा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना भी गिलोय के फायदे में शामिल है। गिलोय सत्व या गिलोय जूस का नियमित सेवन शरीर की इम्युनिटी पॉवर को बढ़ाता है जिससे सर्दी–जुकाम समेत कई तरह की संक्रामक बीमारियों से बचाव होता है।

7. **पीलिया** : पीलिया के मरीजों को गिलोय के ताजे पत्तों का रस पिलाने से पीलिया जल्दी ठीक होता है। इसके अलावा गिलोय के सेवन से पीलिया में होने वाले बुखार और दर्द से भी आराम मिलता है। गिलोय स्वरस के अलावा आप पीलिया से निजात पाने के लिए गिलोय सत्व का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

8. **एनीमिया** : शरीर में खून की कमी होने से कई तरह के रोग होने लगते हैं जिनमें एनीमिया सबसे प्रमुख है। आमतौर पर महिलायें एनीमिया से ज्यादा पीड़ित रहती हैं। एनीमिया से पीड़ित महिलाओं के लिए गिलोय का रस काफी फायदेमंद है। गिलोय के रस का सेवन शरीर में खून की कमी को दूर करता है और इम्युनिटी क्षमता को मजबूत बनाता है।

9. **त्वचा के लिए गुणकारी** : गिलोय त्वचा संबंधी रोगों और एलर्जी को दूर करने में भी सहायक है। अर्टिकेरिया में त्वचा पर होने वाले चकत्ते हों या चेहरे पर निकलने वाले कील मुंहासे, गिलोय इन सबको ठीक करने में मदद करती है।

10. **गठिया** : गिलोय में एंटी–आर्थराइटिक गुण होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण गिलोय गठिया से आराम दिलाने में कारगर होती है। खासतौर पर जो लोग जोड़ों के दर्द से परेशान रहते हैं उनके लिए गिलोय का सेवन करना काफी फायदेमंद रहता है।

11. **अस्थमा** : गिलोय में एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण होने के कारण यह सांस से संबंधित रोगों से आराम दिलाने में प्रभावशाली है। गिलोय कफ को नियंत्रित करती है साथ ही साथ इम्युनिटी पॉवर को बढ़ाती है जिससे अस्थमा और खांसी जैसे रोगों से बचाव होता है और फेफड़े स्वस्थ रहते हैं।

12. **लीवर के लिए फायदेमंद** : अधिक शराब का सेवन लीवर को कई तरीकों से नुकसान पहुंचाता है। ऐसे में गिलोय सत्व का सेवन लीवर के लिए टॉनिक की तरह काम करता है। यह खून को साफ़ करती है और एंटीऑक्सीडेंट एंजाइम का स्तर बढ़ाती है। इस तरह यह लीवर के कार्यभार को कम करती है और लीवर को स्वस्थ रखती है। गिलोय के नियमित सेवन से लीवर संबंधी गंभीर रोगों से बचाव होता है।

गिलोय के नुकसान और सावधानियां

गिलोय के लाभ के साथ–साथ इसके कुछ नुकसान भी हैं। जिनका ध्यान रखना चाहिए।

1. **ऑटो इम्यून बीमारियों का खतरा** : गिलोय के सेवन से शरीर की इम्युनिटी पॉवर मजबूत तो होती है लेकिन कई बार इम्युनिटी के अधिक सक्रिय होने की वजह से ऑटो इम्यून बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसीलिए ऑटो इम्यून बीमारियों जैसे कि मल्टीप्ल स्केरेलोसिस या रुमेटाइड आर्थराइटिस आदि से पीड़ित मरीजों को गिलोय से परहेज की सलाह दी जाती है।

2. **निम्न रक्तचाप** : जो लोग पहले से ही निम्न रक्तचाप (लो ब्लड प्रेशर) के मरीज हैं उन्हें गिलोय के सेवन से परहेज करना चाहिए क्योंकि गिलोय भी ब्लड प्रेशर को कम करती है। इससे मरीज की स्थिति बिगड़ सकती है। इसी तरह किसी सर्जरी से पहले भी गिलोय का सेवन किसी भी रूप में नहीं करना चाहिए क्योंकि यह ब्लड प्रेशर को कम करती है जिससे सर्जरी के दौरान मुश्किलें बढ़ सकती हैं।

अब आप गिलोय के फायदे और नुकसान से भलीभांति परिचित हो चुके हैं। इसलिए अपनी ज़रुरत के हिसाब से गिलोय का नियमित सेवन शुरु कर दें। इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि गिलोय जूस या गिलोय सत्व का हमेशा सीमित मात्रा में ही सेवन करें। हालांकि गिलोय के नुकसान बहुत ही कम लोगों में देखने को मिलते हैं लेकिन फिर भी अगर आपको किसी तरह की समस्या होती है तो तुरंत नजदीकी डॉक्टर को ज़रूर सूचित करें।

हिंदी अनुभाग की ओर से.....

विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में लिए गए निर्णय

विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक 17 अगस्त, 2023 को होटल अशोक, नई दिल्ली में माननीय केंद्रीय मंत्री, विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा, श्री आर.के.सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। उनके साथ श्री आशीष उपाध्याय, विशेष सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, श्री जितेश जॉन, आर्थिक सलाहकार (प्रभारी राजभाषा) तथा श्री अनिल कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने मंच की शोभा बढ़ाई। बैठक में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों के साथ–साथ विद्युत मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालयों/उपक्रमों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। माननीय अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि देश निर्माण के लिए पूरे देश को एक कड़ी में जोड़े जाने के लिए राष्ट्रभाषा की बहुत अहमियत है। उन्होंने राष्ट्रीय एकता विकसित करने के लिए आपसी संवाद का एक माध्यम बनाने तथा एक राष्ट्रभाषा होने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए उपक्रमों को बधाई दी तथा इसी प्रकार सुधार की दिशा में आगे बढ़ते रहने की अपेक्षा की।

बैठक में सलाहकार समिति के माननीय सदस्यों ने राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करने हेतु निम्नानुसार विभिन्न सुझाव दिए–

- सर्वप्रथम श्री गोपाल कृष्ण फरलिया ने अपना परिचय देते हुए बताया कि राजभाषा विभाग के नियमानुसार हिंदी सलाहकार समिति की बैठक वर्ष में दो बार आयोजित होनी आवश्यक है। उन्होंने मंत्रालय तथा उपक्रमों में रिक्त पदों को भरने संबंधी उचित कार्रवाई करने का सुझाव दिया। उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए माननीय मंत्री जी द्वारा आदेश जारी करने, राष्ट्रपति जी के आदेशानुसार, हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की गोपनीय रिपोर्ट में हिंदी में प्रविष्टि करने पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने माननीय सभी सदस्यों को सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिकाएं प्रेषित करने तथा उन पत्रिकाओं में बैठक में लिए गए निर्णय प्रकाशित करने का सुझाव दिया। उन्होंने मंत्रालय तथा मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालय द्वारा कार्यशालाएं, संगोष्ठियां, सम्मेलन आदि आयोजित करने पर बल दिया।

- श्री अरुणाकर पाण्डेय ने पिछली बैठक में दिए गए सुझावों तथा मंत्रालय एवं सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा हिंदी के क्षेत्र में की गई प्रगामी प्रगति की प्रशंसा की। उन्होंने उत्साह निरंतर रखने तथा विद्युत के इतिहास संबंधी प्रकाशित पुस्तकें बच्चों के लिए छापने और सभी के लिए उपलब्ध कराने को कहा। उन्होंने पत्रिकाओं में लिखे जाने वाले लेखों पर समय निकालकर अपने कार्यालय में चर्चा करने, अपने–अपने कार्यालयों से सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों के अनुभव का कार्यशालाओं के माध्यम से लाभ उठाने का भी सुझाव दिया।

- श्री पूरन चन्द टंडन ने अपना परिचय देते हुए सभी का धन्यवाद करते हुए हिंदी की संस्थाओं में वरिष्ठ अधिकारियों की अनिवार्यता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने देश में मौजूद सभी उपक्रमों में समिति के सदस्यों के अनुभव का लाभ उठाने तथा दिल्ली से बाहर बैठक कराने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ अधिकारियों के साथ–साथ निचले स्तर के कर्मचारियों को भी हिंदी में कार्य करना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि देश में एक विश्वविद्यालय केवल अनुवाद का ही होना चाहिए तथा नई पीढ़ी में हिंदी के प्रति गौरव का भाव बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि तकनीकी शब्दावली को अपनाया जाना चाहिए और पुस्तकालयों में हिंदी की पुस्तकों

की खरीद को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने हिंदी पखवाड़े में प्रोत्साहन के रूप में शब्दकोष, शब्दावली वितरित करने और सभी उपक्रमों में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की हिंदी–अंग्रेजी शब्दावलियों के प्रयोग को सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विद्युत विकास के क्षेत्र में हिंदी में लेख लिखने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

- श्री विकास दवे ने यह सुझाव दिया कि जिन कार्यालयों में हिंदी कार्य की प्रतिशतता कम है, उन्हें बेहतर प्रतिशतता दर्शाने वाले दूसरे कार्यालय से प्रेरणा लेकर अपने कार्यालय में हिंदी का संवर्धन करना चाहिए। कार्यशालाओं का नियमित रूप से आयोजन करने और जिन कार्यालयों की पिछली 2 तिमाहियों में प्रतिशतता कम है, उस पर विशेष ध्यान देने के बारे में सुझाव दिया। उन्होंने नीपको में पदों की स्थिति को स्पष्ट करने को कहा। उनके अनुसार सभी उपक्रमों को एक श्रृंखला बनाकर क्रमिक रूप से काव्य गोष्ठी, संगोष्ठियों का आयोजन करना चाहिए। उन्होंने विद्युत मंत्रालय की वेबसाइट सबसे पहले हिंदी में ही खुलने पर विशेष बल दिया।

- श्री विनय प्रीत सिंह ने पुस्तकालयों में डिजिटल पुस्तकों की खरीद पर बल देने पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने मंत्रालय तथा अधीनस्थ कार्यालयों में रिक्त पदों को भरने संबंधी उचित कार्रवाई करने तथा उचित माध्यम से वरिष्ठ स्तर तक पत्राचार करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए राजभाषा लक्ष्यों एवं नियमों का सख्ती से पालन किया जाए। उन्होंने मंत्रालय और उसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों में संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारियों द्वारा अनिवार्य रूप से हिंदी में कार्य करना सुनिश्चित करने संबंधी अपने विचार साझा किए। उन्होंने देश के माननीय प्रधानमंत्री और गृहमंत्री जी की भी सराहना की कि वे अपने सारे वक्तव्य हिंदी में देते हैं। साथ ही, लोकसभा में प्रस्तुत किए गए 3 बिलों अर्थात् भारतीय न्याय संहिता बिल, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 और भारतीय साक्ष्य संहिता के नाम हिंदी में रखा जाना प्रशंसनीय है।

- श्री यतीन्द्र कुमार कटारिया ने कहा कि देश की स्वतंत्रता प्राप्ति में बहुत बड़ा योगदान देने वाली हिंदी पर हम सबको गर्व करना चाहिए। हिंदी को लेकर एक अपार उत्साह विश्व पटल पर है। उन्होंने कहा कि सब भारतीयों का भी यह दायित्व बनता है कि अपने इस राष्ट्रीय प्रतीक स्वरूप, अपनी भाषा को बढ़ाने के लिए अपना–अपना योगदान दें। विद्युत मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रम अपने–अपने क्षेत्र में जो कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं उसमें हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी का विश्व पटल पर विस्तार पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि फिजी की संसद का एक विशेष सत्र हिंदी में आयोजित किया गया और वहां हिंदी को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया।

- डॉ. सीमा देवबर्मा जी ने कहा कि राजभाषा संबंधी सारे कार्य संतोषजनक है। उन्होंने अहिंदी प्रदेश से संबंध रखने के कारण अगला कार्यक्रम त्रिपुरा में किए जाने का निवेदन किया ताकि वहां के लोग हिंदी का महत्व जान पाएं।

- श्री ओम प्रकाश शुक्ल ने बताया कि जो पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं, उनके मूल्यांकन से हिंदी भाषा की प्रगति संतोषजनक होने का बोध होता है। उन्होंने संतोष व्यक्त करते हुए यह निवेदन किया कि कम से कम एक–दूसरे को ही पत्र लेखन हिंदी माध्यम से ही किया जाए। उन्होंने इस प्रयोग को बहुत बड़ा कार्य तथा धरातल पर किए गए कार्य से संबोधित किया।

दो कविताएं

कविता

के.सी.उनियाल
उप महाप्रबंधक (भू–विज्ञान), ऋषिकेश

सब बढ़िया है

अपने दुःख–दर्द छिपाने का, बस बचा एक ही जरिया है।
जब पूछे कोई कैसे हो, हम कह देते सब बढ़िया है।
चेहरे पर मुस्कान लिए, वाणी में रहते रस घोले।
स्वप्न सरीखा यह जीवन, जो सरक रहा हौले–हौले।
अश्रु किन्हें हम दिखलायें, किससे हम मन की बात कहें।
बेहतर लगती पीड़ा अपनी, भीतर अपने चुप–चाप सहें।
कुछ पीड़ा सुन मुस्करायेंगे, कुछ नमक छिड़क कर जायेंगे।
कुछ पाप पुण्य का लगा गणित, पापों का फल बतलायें।
किसकी जिह्वा हम पकड़ेंगे, किस–किस के होंठ सिलायें।
ऐसा बोला तो क्यों बोला, किस–किस से लड़ने जायेंगे।
चुपचाप सुनेंगे तानों को, दिल अपना भी एक दरिया है।
फिर पूछेगा जब हाल कोई, तो कह देंगे सब बढ़िया है।

मेरी मां

गिरती हूँ तो हाथ देकर संभाल लेती है।
रोता हूँ तो अपने आँचल से आंसू पोंछ देती है।
मुझे बनाने में सबसे ज्यादा अंश है जिसका।
वो है मेरी मां।
दोस्त की कमी पूरी करती है।
मेरी तरक्की देख कर इतराती है ।
रहती है परेशान, फिर भी मुस्कराती है।
बस तभी मेरा हौंसला बन जाती है ।
वो है मेरी मां।
पापा के हर सवाल का जवाब है।
पापा की डांट पर मरहम है ।
उदास हो जाऊं तो मेरी मुस्कान है ।
वो है मेरी मां।

जिन्दगी

कविता

सिमरन शाहीन
कार्यपालक प्रशिक्षु (मा.सं.एवं प्रशा.), ऋषिकेश

जिन्दगी खुलके जीने का नाम है, कभी धूप तो कभी छांव होने का नाम है,
कठिन परिस्तिथियों से आगे निकलकर, कुछ कर जाने का नाम है।

अपने सपनों को पूरा करने के जज्बे का नाम है जिन्दगी, जिन्दगी खुद से जीतने का नाम है ।
खुद से रूबरू होते हुए वक्त के साथ चलने का नाम है जिन्दगी,
छोटी सी है जिन्दगी हर हाल में खुश रहने का नाम है जिन्दगी।

कल की चिंता छोड़कर, आज और अभी में जीने का नाम है जिन्दगी ।
उलझने तो बहुत है जिन्दगी में, सुलझाते हुए, डट के सामना करने का नाम है जिन्दगी ।

हौसले से जीने का नाम है जिन्दगी, कभी हारना तो कभी जीत जाने का नाम है जिन्दगी ।
खुश रहकर, स्वस्थ रहकर अपने लक्ष्यों को पूरा करने का नाम है जिन्दगी,
चलना है अपने कर्तव्य पथ पर इसी का नाम है जिन्दगी ।

बहकों मतना बेटियों

कविता

अवधेश चन्द्र गुप्ता
वरि. प्रबंधक (नियोजन), टिहरी

बहकों मतना बेटियों,
कुल को समझों खास ।
पैंतीस टुकड़ों में कटा,
श्रद्धा का विश्वास।

भरोसा मतना कीजिए,
सब पर आंखें मींच।
स्वर्ण मृग के भेष में,
आ सकता मारीच।

.मां बाप के हृदय से,
गर निकलेगी आह।
कभी सफल होगा नहीं,
ऐसा प्रेम विवाह।

आधुनिकता के समर्थकों,
इतना रखना याद ।
बिन मर्यादा आचरण,
बिगड़ेगी औलाद

जीवन स्वतंत्र आपका,
करिये फैसला आप ।
पर ऐसा कुछ न कीजिए,
मुंह छिपाये मां बाप ।

घर आंगन की गौरैया,
कुल की इज्जत आप
सावधान रहना जरा,
षड्यंत्रों को भांप।

बॉलीबुड की गंदगी,
खत्म किये संस्कार।
जालसाज अच्छे लगें,
बुरा लगे परिवार ।

जब कभी तन पर चढें,
अंधा इश्क खुमार।
इस दरिदंगी को याद तुम,
कर लेना इकबार।

नारी तुम श्रद्धा हो,
न धर उपयोगी चीज।
फिर किसकी औकात जो,
काट रखें तुम्हें फ्रीज ।

संस्कारों की सराहना,
कुकृत्य धिक्कारो आज।
आने वाली पीढियां,
करेंगी तुम पर नाज।

जब तक सांस है, तब तक आस है

कविता

सुश्री भावना रावत, प्रबंधक
नियोजन विभाग, पीएसपी, टिहरी

जब वक़्त थोड़ा बुरा होता है तब ये ज़माना सोचता है तुझे गिराने की।
तू धूप में अब किसी को छांव ना दे रहा तो लगा सोचने तुझे मिटाने की।
कभी किसी चांदनी रात में जब बादलों के झरोखे से चांद बाहर आएगा,
तो ये भी मुमकिन है कि तेरा वजूद उस चांद की खूबसूरती को चार चांद लगाएगा।

भले ही गिर गए हों तेरी शाखों से पत्ते और बीत गये हों तेरे बहार वाले दिन।
पर तब तक तेरी जिंदगी सिर्फ तेरी है, जब तक तू खड़ा है अपने दम पर।
माना अब किसी राही को तू वो छांव न दे पाये जिसकी उसको दरकार थी।
पर शायद तेरी मौजूदगी से एक नया फलसफा मिले और शुरू हो एक नया सफर।

खत्म कुछ भी नहीं तब तक ज़िंदगी में जब तक छोटी सी आस है बाकी।
जब तक सपने हैं और मकसद है जिंदगी में तो फिर तू क्यों डगमगायेगा।
कभी किसी चांदनी रात में जब बादलों के झरोखे से चांद बाहर आएगा,
तो ये भी मुमकिन है कि तेरा वजूद उस चांद की खूबसूरती को चार चांद लगाएगा।

रागी

कविता

अवधेश चन्द्र गुप्ता
वरि. प्रबंधक (नियोजन), टिहरी

यह रागी हुई अभागी क्यों?"
चावल की किस्मत जागी क्यों ?
जो 'ज्वार जमी जन–मानस में,
गेहूं के दर से भागी क्यों ?

यूँ होता श्वेत 'झगोरा' है,
यह धान सरीखा गोरा है।
पर यह भी गेहूँ से,
जिसका हर कही ढिंढोरा है।

जाने कितने थे अन्न यहाँ ?
एक–दूजे से प्रसन्न यहाँ,
जब आया दौर सफेदी का,
हो गए मगर सब खिन्न यहाँ।

अब कहाँ वो 'कोदो'–'कुटकी' है ?
'साँवाँ' की काया भटकी है,
सन्यासी हुआ 'बाजरा' अब,
गुम हुई 'काँगणी' छुटकी है।

अब जिसका रंग, सुनहरा है,
सब तरफ उन्हीं का पहरा है।
अब कौन सुने मटमेलों की,
गेहूँ का साया गहरा है।

यह देता सबसे कम पोषण,
और करता है ज्यादा शोषण,
तोहफे में दिए रसायन अर,
माटी–पानी का अवशोषण।

यह गेहूँ धनिया सेठ बना,
उपभोगी मोटा पेट बना,
जो हजम नहीं कर पाए है ,
उनकी चमड़ी का फेट बना।

अब आएंगे दिन 'रागी' के,
उस 'कुरी', बटी' बैरागी के,
जब 'राजगिरा' फिर आएगा,
और ताज गिरे बड़भागी के।

जब हमला हो 'हमलाई' का,
छँट जाए भरम मलाई का,
चीनी पर भारी 'चीना' हो,
टूटेगा बंध कलाई का।

बीतेगा दौर गुलामी का,
गोरों की और सलामी का,
जो बची धरोहर अपनी,
गुजरा अब वक्त नीलामी का।

नोट– रागी, ज्वार, झगोरा, कोदो, कुटकी, साँवाँ, बागरा, काँगणी, कुरी, बटी, राजगिरा, हमलाई, चीन ये सब विभिन्न प्रकार के अन्न (millets) है, जो गेहूँ और चावल की साजिश के शिकार हुए है। कविता प्रतीकात्मक है, जो मात्र अनाजों तक सीमित नहीं है।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

हिंदी दिवस समारोह

इस वर्ष हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा मनाने के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देश थे कि कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के आयोजन की रूपरेखा इस प्रकार बनाई जाए कि इसका शुभारंभ 14 सितंबर, 2023 को माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित होने वाले तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन से हो और इसका समापन 29 सितंबर, 2023 को संबंधित कार्यालय में किया जाए। उपर्युक्त आदेशों के अनुपालन में निगम के निदेशक(कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह एवं उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने 14–15 सितंबर, 2023 को पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित हुए हिंदी दिवस समारोह एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लिया। इनके साथ ही कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश से श्री आशुतोष कुमार आनंद, वरि.प्रबंधक (मा.सं.) एवं टिहरी यूनिट से प्रबंधक(राजभाषा), श्री इन्द्रराम नेगी ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य श्री जी.के.फरलिया का स्वागत करते श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक)

हिंदी दिवस के अवसर पर निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री आर.के.विश्नोई ने निगम में अधिकारियों व कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित व प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अपील जारी की। जिसे माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह, माननीय केंद्रीय विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, श्री आर.के.सिंह की हिंदी दिवस पर जारी की गई अपील के साथ निगम की सभी यूनिटों/कार्यालयों के कर्मचारियों के मध्य परिचालित किया गया।

हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक) का स्वागत करते श्री डी.पी.पात्रो, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 14 सितंबर से 29 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान 14 सितंबर को हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय ''सूचना प्रौद्योगिकी और 21वीं सदी की हिंदी'' रखा गया था। 15 सितंबर को नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, 18 सितंबर को अनुवाद प्रतियोगिता, 19 सितंबर को हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, 20 सितंबर को कार्यपालकों एवं गैर कार्यपालकों के लिए अलग–अलग हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता, 21 सितंबर को नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए राजभाषा हिंदी एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा 22 सितंबर को काव्य–पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 28 सितंबर को कार्यालय के वरि. अधिकारियों के लिए हिंदी संगोष्ठी का आयोजन

किया गया। जिसका विषय ''अर्वाचीन भारत एवं हिंदी'' था। इस अवसर पर विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के वरि.सदस्य, श्री जी.के.फरलिया को आमंत्रित किया गया था। जिन्होंने संगोष्ठी में अपने विचार रखे और वरि. अधिकारियों का मार्गदर्शन किया। इस दौरान 29 सितंबर को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें विभिन्न विभागों/अनुभागों में पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के प्रतिशत में बढ़ोतरी की समीक्षा की गई। बैठक के बाद हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

हिंदी पखवाड़ा समापन तथा पुरस्कार वितरण

हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण 29 सितंबर, 2023 को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक(कार्मिक) ने की। कार्यक्रम में श्री जी.के.फरलिया, सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। इनके साथ ही श्री ए.बी.गोयल, कार्यपालक निदेशक (वित्त) एवं श्री वीरेन्द्र सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (ओ.एम.एस) ने मंच की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित थे। मंचासीन अतिथिगणों का स्वागत पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया।

पखवाड़ा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी

पखवाड़ा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित करते श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक)

श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक(राजभाषा) ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सर्वप्रथम सभी उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों के समक्ष अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़ी गई जिसमें निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों से अपील की गई थी कि वे राजभाषा विभाग के द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का भरसक प्रयास करें। समारोह में मंचासीन अतिथिगणों ने विजेता अधिकारियों व कर्मचारियों को पुरस्कृत किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष, श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक) ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं एवं प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत विजेता रहे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि हिंदी के प्रयोग के लिए भारत सरकार के द्वारा अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने विभिन्न शब्दकाषों की रचना की है। टाइपिंग के लिए अनेक टूल आ गए हैं, इसलिए अब हिंदी में कार्य करना मुश्किल नहीं रहा है। उन्होंने सभी कर्मचारियों से निगम में राजभाषा हिंदी को पूर्ण स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का अनुरोध किया ।

अंत में उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने सभी विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों एवं हिंदी पखवाड़ा के प्रतिभागियों तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले विभागों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया ।

टिहरी यूनिट

टिहरी यूनिट में 01 सितंबर, 2023 से 15 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ कार्यपालक निदेशक (टीसी) श्री एल.पी.जोशी की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक, श्री जोशी के साथ मुख्य महाप्रबंधक (ओएंडएम), श्री आर.आर. सेमवाल, महाप्रबंधक (यांत्रिक), श्री एम. के. सिंह, महाप्रबंधक (आर.सी.), श्री विजय सहगल, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ. ए.एन. त्रिपाठी एवं प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्र राम नेगी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। पखवाड़ा के दौरान हिंदी में काम–काज को बढावा देने के उद्देश्य से निबंध, टिप्पण एवं आलेखन, सुलेख, वाद–विवाद, अनुवाद एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का समापन एवं पुरस्कार वितरण 29 सितंबर, 2023 को किया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री एल.पी.जोशी ने गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़कर सुनाई। उन्होंने सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी पखवाड़ा के आयोजन का मुख्य उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की आदत डालना है। इस अवसर पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

श्री एल.पी.जोशी, कार्यपालक निदेशक, मा.सं. एवं प्रशा. विभाग को चल राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए

श्री एल.पी.जोशी, कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में पखवाड़ा का पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह

कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिकारियों में श्री अभिषेक गौड़ महाप्रबंधक (नियोजन), श्री एम.के.सिंह, महाप्रबंधक (यांत्रिक), श्रीमती नमिता डिमरी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, श्री एम.एल. खांगर, उप महाप्रबंधक, श्री डी.सी. भट्ट, उप महाप्रबंधक, श्री देवी प्रसाद भट्ट, वरिष्ठ प्रबंधक, श्री मनवीर सिंह नेगी, प्रबंधक, श्री दीपक उनियाल, उप प्रबंधक, श्री आर.डी. ममगाईं, उप प्रबंधक (जन संपर्क) के साथ–साथ परियोजना के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। कार्यक्रम के समापन पर श्री आर.डी.ममगाईं, उप प्रबंधक (जनसंपर्क/हिंदी) ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कोटेश्वर यूनिट

कोटेश्वर यूनिट में 01 सितंबर, 2023 से 15 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़ा के दौरान कार्यालय में हिंदी में काम–काज को बढावा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध, नोटिंग ड्राफ्टिंग, सुलेख, वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण महाप्रबंधक (परियोजना), श्री अनिरुद्ध कुमार विश्नोई की अध्यक्षता में किया गया। श्री विश्नोई ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत विजेता रहे अधिकारियों व कर्मचारियों को पुरस्कृत किया। हिंदी में सर्वाधिक काम–काज करने वाले विभाग को चल राजभाषा ट्राफी से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह का दृश्य

महाप्रबंधक (परियोजना), श्री अनिरुद्ध कुमार विश्नोई ने उपस्थित कर्मचारियों को माननीय केंद्रीय गृहमंत्री, श्री अमित शाह एवं निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील पढ़कर सुनाई। तथा अपने संबोधन में सभी कर्मचारियों को अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिकारियों में श्री विकास चौहान, अपर महाप्रबंधक, श्री विजय बहुगुणा, उप महाप्रबंधक, श्री सुबोध गैरोला, उप महाप्रबंधक, डॉ.जी. श्रीनिवास, पूर्व मुख्य चिकित्सा अधिकारी, श्री इंद्र राम नेगी, प्रबंधक (राजभाषा), श्री एस.एस. राणा, प्रबंधक के साथ ही परियोजना के अनेक वरिष्ठ अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री आर.डी.ममगाईं, उप प्रबंधक (जनसंपर्क) द्वारा किया गया।

एनसीआर कार्यालय

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में 14 सितंबर, 2023 को हिंदी दिवस मनाया गया तथा हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन एवं शुभारंभ श्री संदीप सिंघल, मुख्य महाप्रबंधक (प्रभारी) महोदय के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री सिंघल ने इस शुभ अवसर पर समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में ज्यादा से ज्यादा कार्य करने के लिए प्रेरित किया तथा निर्देशित किया कि समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता सुनिश्चित करें। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा हिंदी दिवस पर जारी अपील पढ़ी गई।

पुरस्कार वितरण समारोह का दृश्य

पुरस्कार वितरण समारोह का दृश्य

हिंदी पखवाड़ा के दौरान में 15 सितंबर को निबंध प्रतियोगिता, 18 सितंबर को नोटिंग ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, 20 सितंबर को अनुवाद प्रतियोगिता तथा 22 सितंबर को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा का समापन 28 सितंबर को बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस बार संविदा पर कार्यरत कर्मियों के लिए भी एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को कारपोरेट कार्यालय से प्राप्त दिशा–निर्देशों के अनुसार पुरस्कृत किया गया। मुख्य

महाप्रबन्धक (प्रभारी), श्री संदीप सिंघल ने पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा भाग लेने पर आभार प्रकट किया तथा भविष्य में प्रतिभागियों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2023–24 के अनुपालन में एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी में हिंदी पत्राचार शत–प्रतिशत होना चाहिए क्योंकि एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी ''क'' क्षेत्र में स्थित है।

खुर्जा एसटीपीपी

खुर्जा एसटीपीपी में 14 सितंबर से 29 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत परियोजना के कर्मचारियों के लिए निबंध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, अनुवाद, वाद–विवाद, काव्य–पाठ, हिंदी टंकण एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा हिंदी दिवस पर जारी अपील पढ़ी गई। हिंदी पखवाड़ा का समापन 29 सितंबर, 2023 को किया गया। कार्यपालक निदेशक (परियोजना), श्री कुमार शरद ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए।

श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक, मा.सं. एवं प्रशा. विभाग के अधिकारियों को चल राजभाषा ट्राफी प्रदान करते हुए

श्री ए.के. विश्वकर्मा, वरि.प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने और सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग करने के लिए सभी अधिकारियों से आग्रह किया। अंत में श्री यशवंत सिंह नेगी, कनि. अधिकारी (हिंदी) ने कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों तथा सभी प्रतिभागियों को हिंदी पखवाड़ा को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करने हेतु धन्यवाद ज्ञापन प्रेषित किया।

उत्कृष्ट लेखक पुरस्कृत

टीएचडीसी की हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' के वर्ष 2022–23 में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए श्री शिवराज चौहान, उप महाप्रबंधक (प्रापण) को अंक–28 एवं 29 में प्रकाशित उनके लेख ''विद्युत वाहन–भविष्य का वाहन, पर्यावरण मित्र वाहन भाग–3'' के लिए, श्री आशुतोष कुमार आनंद, वरि.प्रबंधक (निदेशक–का. सचिवालय) को उनके लेख ''सौर से शौर्य'' के लिए, श्री हरीश चन्द्र उपाध्याय, उप महाप्रबंधक (वाणिज्यिक) को उनके लेख ''कबीर–एक समाज सुधारक'' के लिए, सुश्री शैला, उप प्रबंधक, एनसीआर कार्यालय कौशांबी को उनके लेख ''नोएडा ट्विन टावर्स'' के लिए तथा श्री सुरेश कुमार, वरि.टेक्नीशियन को उनके लेख ''मृत्यु के नाम पत्र'' के लिए पुरस्कृत किया गया। ये पुरस्कार कारपोरेट कार्यालय में 29 सितंबर, 2023 को आयोजित हुए हिंदी पखवाड़ा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक(कार्मिक) के कर–कमलों से प्रदान किए गए।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

प्रथम कार्यशाला

श्री वीर सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की अध्यक्षता में कार्यशाला का शुभारंभ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार के ऋषिकेश एवं पर्वतीय क्षेत्र में स्थित सदस्य संस्थानों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 10 जुलाई, 2023 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का शुभारंभ टीएचडीसी इंडिया लि. के मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशासन), श्री वीर सिंह की अध्यक्षता में हुआ। श्री सिंह ने जर्मनी के प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार मार्टिन लूथर के व्यक्तव्य ''हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुंचा जा सकता'' का उदाहरण देते हुए कहा कि जब विदेशी लोग हिंदी के प्रति विचार इस प्रकार के विचार रखते हैं तो हमें भी बिना हिचक इसका सम्मान करते हुए इसे अपने समस्त सरकारी कामकाज में प्रयुक्त करना चाहिए। कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री हरीश बगवार, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), बीएचईएल ने अपने व्याख्यान में भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं संवैधानिक प्रावधानों पर सभी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। लंच के बाद के सत्र में टीएचडीसी के उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने प्रतिभागियों को नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया। कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लि., ऋषिकेश के साथ–साथ नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कुल मिलाकर 30 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। प्रतिभागियों को हिंदी की साहित्यिक पुस्तकें वितरित की गई।

द्वितीय कार्यशाला

श्री डी.पी.पात्रो, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की अध्यक्षता में कार्यशाला का शुभारंभ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार के ऋषिकेश एवं पर्वतीय क्षेत्र में स्थित सदस्य संस्थानों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 14 दिसंबर, 2023 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का शुभारंभ टीएचडीसी इंडिया लि. के अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशासन), श्री डी.पी.पात्रो की अध्यक्षता में हुआ। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. नरेश मोहन, वरि.साहित्यकार, कवि एवं लेखक ने अपने व्याख्यान में हिंदी भाषा के उद्भव से विकास तक की यात्रा की जानकारी दी।उन्होंने हिंदी की वर्तमान स्थिति एवं इसके स्वर्णिम भविष्य से भी अवगत कराया। लंच के बाद के सत्र में टीएचडीसी के उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने प्रतिभागियों को नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया। कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लि., ऋषिकेश के साथ–साथ नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कुल मिलाकर 28 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। प्रतिभागियों को प्रशासनिक शब्दावली, कार्यशाला सहायिका वितरित की गई।

टिहरी एवं कोटेश्वर यूनिट

प्रथम कार्यशाला

कार्यशाला में दीप प्रज्ज्वलन का दृश्य

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी एवं कोटेश्वर के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 25 अगस्त, 2023 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप महाप्रबंधक (सुरक्षा) श्री एम.एल.खांगर ने की। श्री खांगर ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व तो है ही, साथ ही यह हमारा नैतिक कर्तव्य भी है। कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य, श्री डी.एस. रावत ने उपस्थित प्रतिभागियों को राजभाषा नियम एवं अधिनियम एवं कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप एवं पत्राचार के विविध रूपों पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी द्वारा कंप्यूटर एवं मोबाइल में हिंदी वाइस टाइपिंग एवं कार्यालय में मानक शब्दावली के प्रयोग पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण दिया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनि. अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 38 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर श्री आर. डी. ममगाई, उप प्रबंधक, जन संपर्क/ हिंदी द्वारा सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

द्वितीय कार्यशाला

कार्यशाला में व्याख्यान देते श्री डी.एस.रावत, पूर्व वरि. हिंदी अधिकारी

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी एवं कोटेश्वर के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 30 नवंबर, 2023 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), डॉ. ए.एन. त्रिपाठी ने की। श्री त्रिपाठी ने राजभाषा के स्वरूप एवं महत्व पर बल देते हुए कहा कि हम सभी 'क' क्षेत्र में आते हैं इसलिए हम सुनिश्चित करें कि हम अपने समस्त कार्य हिंदी में ही करें। हमें अपने सभी कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य, श्री डी.एस.रावत, पूर्व वरि. हिंदी अधिकारी ने उपस्थित प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, अधिनियमों एवं नियमों की जानकारी दी। प्रबंधक(हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी द्वारा कंप्यूटर एवं मोबाइल में हिंदी वाइस टाइपिंग के प्रयोग पर प्रस्तुतिकरण दिया गया। कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी एवं कोटेश्वर के 30 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

एनसीआर कार्यालय

एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी में 06 सितंबर, 2023 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती नवनीत किरन, सीएमओ द्वारा की गई। इस अवसर पर उप महाप्रबंधक (मा.सं.), ए.जॉन डविड ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति का आभार प्रकट करते हुए कहा कि हम सबको हिंदी में कार्य करने के संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करने हेतु आगे आना चाहिए। इस हिंदी कार्यशाला के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी, जो कि निश्चित रूप से उपयोगी रहेगी। कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु नराकास, गाजियाबाद के सचिव, श्री ललित भूषण, राजभाषा अधिकारी, बीएसएनएल, एएलटी सेंटर, गाजियाबाद को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने हिंदी में किए जाने वाले काम–काज को सुगम बनाने के लिए नए प्रौद्योगिकी टूल्स के प्रयोग पर चर्चा की और गूगल पर हिंदी में बोलकर टाइप करने की युक्ति से उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अवगत कराया। श्री भूषण जी ने अन्य भाषाओं से हिंदी सीखने के ऑनलाइन पोर्टल का प्रदर्शन भी किया।

कार्यशाला में व्याख्यान देते नराकास, गाजियाबाद के सचिव, श्री ललित भूषण

खुर्जा एसटीपीपी

खुर्जा एसटीपीपी परियोजना में 19 दिसंबर, 2023 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री आर.एम. दूबे, महाप्रबंधक द्वारा मुख्य वक्ता व हिंदी संकाय श्री प्रेम सिंह (पूर्व संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग) का स्वागत किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में वहां उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालय के कार्यों में हिंदी काम–काज को बढ़ाने की बात कही। इस कार्यशाला का आयोजन दो सत्रों में आयोजित किया गया । प्रथम सत्र में मानक वर्तनी एवं दूसरे में नोटिंग ड्राफ्टिंग की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इसमें कुल 24 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। कार्यशाला के समापन अवसर पर श्री अमरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने संकाय सदस्य और सभी प्रतिभागियों का आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया।

कार्यशाला में अधिकारियों का ग्रुप फोटोग्राफ

कारपोरेट कार्यालय में 05 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में ऋषिकेश एवं टिहरी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 20 नवंबर, 2023 को 05 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। यह कार्यक्रम मानव संसाधन विकास विभाग के सौजन्य से संचालित किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर श्री एस.के.शर्मा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.वि.) ने उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से आए संकाय सदस्यों डॉ सुरेश कुमार यादव, सहायक निदेशक एवं श्री जे. तिर्की का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि यह 05 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 नवंबर, 2023 से 24 नवंबर,2023 तक आयोजित किया जाएगा। उन्होंने इस प्रकार की पहल के लिए राजभाषा विभाग के केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की सराहना की। कार्यक्रम में उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने कहा कि अनुवाद कार्य में सबके सहयोग की आवश्यकता है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले कागजात मूल रूप में हिंदी में तभी तैयार हो सकते हैं जबकि अधिकाधिक कर्मचारियों को हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कार्य करने में सहजता हो। श्री शर्मा ने इस कार्यक्रम के आयोजन हेतु स्वीकृति देने के लिए शीर्ष प्रबंधन, मानव संसाधन विकास विभाग, संकाय सदस्यों का आभार व्यक्त किया। श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक) ने इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों से अपील करते हुए कहा कि सभी प्रतिभागी इस प्रशिक्षण को प्राप्त कर उसका पूरा उपयोग अपने रोजमर्रा के सरकारी कामकाज में करें तथा अपने साथियों को भी प्रोत्साहित करें कि इस प्रकार के भावी कार्यक्रमों में स्वेच्छा से अपने नामांकन कराएं। उन्होंने कहा कि भविष्य में इस प्रकार के और भी कार्यक्रम आयोजित कराए जाए ताकि सबके कौशल विकास में वृद्धि हो सके।

भू-विज्ञान एवं भू-तकनीकी विभाग मासिक चल राजभाषा शील्ड से सम्मानित

मासिक चल राजभाषा शील्ड प्राप्त करते भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी विभाग के अधिकारी

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 21 नवंबर, 2023 को हिंदी नोडल अधिकारियों की बैठक अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री डी.पी.पात्रो की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी विभाग को मासिक चल राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी विभाग को हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं एवं प्रोत्साहन योजनाओं में सर्वाधिक अधिकारियों व कर्मचारियों के नामांकन भेजने, हिंदी प्रतियागिताओं में प्रतिभागिता करते हुए हिंदी पखवाड़ा को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में योगदान देने हेतु किया गया। निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति को सुदृढता प्रदान करने के लिए इस अभिनव प्रयास के अंतर्गत राजभाषा कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विभाग को प्रत्येक माह यह चल राजभाषा शील्ड प्रदान की जाएगी।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने किया टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के द्वारा 30 नवंबर, 2023 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर उप समिति की संयोजक एवं माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), प्रो. रीता बहुगुणा जोशी, माननीय संसद सदस्य (लोक सभा), श्रीमती रंजनबेन भट्ट, माननीय संसद सदस्य (राज्य सभा), श्री सुशील कुमार गुप्ता ने खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान समिति के सदस्यों ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अन्य कार्यालयों के साथ–साथ इस कार्यालय में भी राजभाषा कार्यान्वयन की भूरि–भूरि प्रशंसा की तथा राजभाषा कार्यान्वयन को और बेहतर करने के लिए अनेक मूल्यवान सुझाव दिए।

इस अवसर पर टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की ओर से श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक), श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक, खुर्जा एसटीपीपी, श्री वीर सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री अमरेन्द्र विश्वकर्मा, वरि.प्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (रा.भा.), तथा श्री यशवंत सिंह नेगी, कनि. अधिकारी (हिंदी), ने निरीक्षण बैठक में भाग लिया। विद्युत मंत्रालय की ओर से श्री धीरज कुमार श्रीवास्तव, मुख्य अभियंता (ईसी, ईटी, ईवी एवं राजभाषा प्रभारी) तथा श्री अनिल कुमार, सहायक निदेशक(राजभाषा) उपस्थित थे।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त
(03 अगस्त, 1885 – 12 दिसंबर, 1965)

“किस गौरव के तुम योग्य नहीं,
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं,
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब हैं जिसके अपने घर के,
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

कर के विधि वाद न खेद करो,
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो,
बनता बस उद्यम ही विधि है,
मिलती जिससे सुख की निधि है,
समझो धिक निष्क्रिय जीवन को,
नर हो, न निराश करो मन को।”

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (हिंदी) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

www.paromita.org